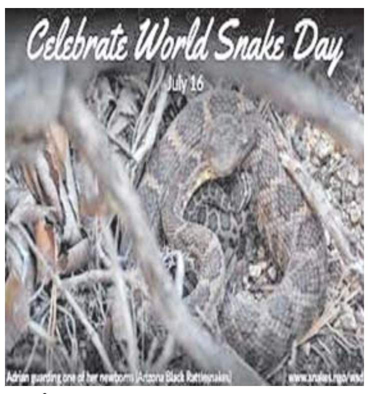

दैनिक **सांध्य प्रकाश**

भोपाल की धड़कन

वर्ष 53/ अंक 02/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹2.10

संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल

▪आर.एन.आई 22296/71 ▪डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, रविवार 16 जुलाई 2023 भोपाल से प्रकाशित

dainiksandhyaprakash.in

सांध्यप्रकाश विशेष

पटवारी भर्ती: चयनित अभ्यर्थियों ने कहा–कुछ की गलती की सजा 9 हजार चयनित अभ्यर्थियों को दी जा रही, 17 को करेंगे प्रदर्शन

भोपाल। मध्यप्रदेश में 6 साल बाद हुई पटवारी भर्ती परीक्षा का विवाद थम नहीं रहा है। सरकार ने मामले में जांच के आदेश के साथ पूरी प्रक्रिया पर रोक लगा दी है, जिससे 9 हजार पदों पर चयनित अभ्यर्थियों की भर्ती प्रक्रिया पर भी रोक लग गई है। चयनित अभ्यर्थियों का कहना है कि कुछ लोगों की गलती की सजा 9 हजार चयनित अभ्यर्थियों को दिया जाना गलत है। वे निर्धारित समयावधि में पटवारी की भर्ती की मांग को लेकर 17 जुलाई को नीलम पार्क, भोपाल में प्रदर्शन करेंगे।

चयनित अभ्यर्थियों ने कहा कि यदि किसी ने गलत किया है तो उसे सजा मिले, सरकार जेल भेज दे, इससे कोई दिक्कत नहीं है, न ही जांच से किसी को कोई परेशानी है, लेकिन पूरे मामले का राजनीतिकरण हो जाने के बाद सरकार ने भर्ती प्रक्रिया पर ही रोक लगा दी, जो गलत है।

चयनित अभ्यर्थियों ने कहा कि पटवारी भर्ती परीक्षा में 12 लाख आवेदक फेल हुए। अब वे प्रदर्शन कर रहे हैं। चयनित सिर्फ 9 हजार हुए, जाहिर सी बात है कि हमारे साथ भीड़ नहीं है, तो क्या इसका अर्थ यह निकाला जाए कि हमारे साथ अन्याय होगा। हमारी मांग है कि शिवराज मामा ने जो 15 अगस्त तक भर्ती का वादा किया था, वो उस वादे को निभाएं।

कांग्रेस नेता अरूण यादव का दावा, पटवारी परीक्षा परिणाम आने से पहले हुई थी शिकायत- प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अरुण यादव ने दावा किया है कि पटवारी परीक्षा परिणाम आने से पहले ही गड़बड़ी किए जाने की शिकायत की जा चुकी थी। परिणाम से पहले हुई शिकायत पर सरकार ने कोई कार्यवाही क्यों नही की।

- शेष पेज 5 पर

इंदौर आरटीओ में मचा घमासान चर्चा का विषय क्यों बन गया?

इंदौर। इंदौर का आरटीओ विभाग इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि यहां पर सालों से जमे कर्मचारियों और अधिकारियों के खिलाफ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा शिकायती पत्र भेजकर इनके द्वारा किए जा रहे भ्रष्टाचार को उजागर किया जा रहा है। हालत इतनी बदतर है कि मामला प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुंच गया है और अब आरटीओ विभाग ने खुद परेशान होकर पुलिस को इस मामले की जांच सौंपी है कि आखिर यह शिकायतें कर कौन रहा है?

सभी जानते हैं कि आरटीओ विभाग में काम कराने के लिए दलालों से लेकर कर्मचारियों तक को सेट करना पड़ता है और यह सेटिंग किस तरह से होती है। इसकी भी जानकारी इंदौर के हर नागरिक को ऐसी स्थिति में आरटीओ सबसे मलाईदार विभाग है और जहां पोस्टिंग कराने तथा जमे रहने के लिए कर्मचारी और अधिकारी पूरी ताकत लगा देते हैं। राजनैतिक पकड़ से लेकर अन्य सभी मामलों में यहां के अधिकारी और कर्मचारी सिद्धहस्त हो गए हैं। और यही वजह है कि सालों से जमे हुए अधिकारियों और कर्मचारियों के कारनामों को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा लगातार प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर मुख्यमंत्री निवास और अन्य सक्षम एजेंसियों तक पहुंचाया जा रहा है, जो शिकायतें की जा रही है। उनसे स्पष्ट जाहिर होता है कि यह पूरा मामला विभागीय विवाद का है

- शेष पेज 5 पर

फिल्मों के बाद अब राजनीति में कदम रखेंगे अभिषेक बच्चन!

- **इस पार्टी के साथ शुरू करेंगे राजनीतिक जीवन**

बॉलीवुड महानायक अमिताभ बच्चन के बेटे अभिषेक बच्चन जल्द ही फिल्मों के बाद और राजनीति में अपने कदम रखने वाले हैं। इसको लेकर कई तरह की जानकारी सामने आई है। अपने पिता की तरह बॉलीवुड फिल्मों में काफी नाम कमा चुके अभिषेक बच्चन अपनी कबड्डी टीम को लेकर भी चर्चाओं का विषय बने रहते हैं।

हालांकि अपने पिता की तरह उन्होंने बॉलीवुड में इतना ज्यादा नाम तो नहीं कमाया लेकिन अभिषेक बच्चन अपनी दमदार अदाकारी के लिए पहचाने जाते हैं। खबर आ रही है कि अभिषेक बच्चन अखिलेश यादव की सामाजिक पार्टी को ज्वाइन करने वाले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अभिषेक बच्चन 2024 में अपने पिता की तरह प्रयागराज से चुनाव लड़ेंगे।

बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि महानायक अमिताभ बच्चन साल 1984 में लोकसभा चुनाव जीता था। लेकिन उन्होंने 3 साल बाद ही इस्तीफा दे दिया था। इतना ही नहीं महानायक की तरह उनकी धर्मपत्नी अभिनेत्री जया बच्चन भी राजनीति का हिस्सा है। उन्होंने पहली बार साल 2004-2006 में संसद सदस्य के रूप में चुना गया था।

इसके बाद साल 2018 में उन्हें राज्यसभा सदस्य बनाया गया। हालांकि एक इंटरव्यू के दौरान अभिषेक बच्चन ने इस बात को जरूर स्वीकारा था कि उनके माता-पिता राजनीति से संबंध रखते हैं। लेकिन वह सिर्फ पर्दे पर का किरदार निभा सकते हैं। असल जिंदगी में राजनीति मैं बिल्कुल भी कदम रखने का उनका मन नहीं है। फिलहाल उनकी तरफ से राजनीति में कदम रखने को लेकर कोई भी जानकारी सामने नहीं आई है।

पूर्व आईएएस अधिकारी अरविंद कुमार बने यूपीईआरसी के चेयरमैन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1988 बैच के अधिकारी अरविंद कुमार को उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेटरी कमिशन का चेयरमैन नियुक्त किया है।

वे 1983 बैच के आईएएस अधिकारी राज प्रताप सिंह का स्थान लेंगे जो 30 जून को रिटायर हो गए। कुमार वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के एडवाइजर के रूप में कार्यरत हैं।बता दें कि कुमार इसी साल फरवरी में रिटायर हुए और उन्हें उसी समय योगी सरकार में सलाहकार नियुक्त किया गया था।

मध्यप्रदेश में विकास पर्व की शुरुआत

मुख्यमंत्री ने कुक्षी सूक्ष्म सिंचाई परियोजना का भूमि पूजन किया

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज धार जिले के कुक्षी स्थित मेघनाद घाट पर 2771 करोड़ की नवीन कुक्षी सूक्ष्म सिंचाई परियोजना के भूमि पूजन के साथ विकास पर्व की शुरुआत की। प्रदेश के सभी जिलों में आज से 14 अगस्त तक विकास पर्व मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि विकास पर्व का उद्देश्य विभिन्न निर्माण कार्यों, विकास गतिविधियों और सभी शासकीय योजनाओं का प्रत्येक पात्र हितग्राही तक लाभ पहुँचाना है।

विकास पर्व के दौरान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान प्रदेश भर का दौरा करेंगे। विकास पर्व के दौरान मुख्यमंत्री जहां करीब 2 लाख करोड़ रुपये के निर्माण एवं विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे, वहीं जनसेवा यात्राओं, आम सभाओं और जनता के साथ संवाद के कार्यक्रमों में भी शामिल होंगे। विकास पर्व के दौरान सीएम कई जिलों में रात्रि विश्राम भी करेंगे। विकास पर्व के दौरान बीना रिफायनरी का विस्तार और केन-बेतवा लिंक योजना का भूमि-पूजन/शिलान्यास, 7245 करोड़ की 15 सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण, 36 हजार 348 करोड़ की 13 सिंचाई परियोजनाओं का भूमि-पूजन, 83 सीएम राइज स्कूलों का शुभारंभ।, नव स्वीकृत मेडिकल कॉलेजों का भूमि-भूजन, राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्ग एवं सड़क निर्माण के 21 हजार 900 करोड रुपए से अधिक की लागत के 1207 कार्यों का भूमि-पूजन किया जाएगा। इसके साथ ही अमृत 2.0 अंतर्गत शहरी पेयजल परियोजनाओं 3000 करोड़ की राशि के कार्य तथा प्रधानमंत्री आवास योजना के लगभग 4 लाख हितग्राहियों का गृह प्रवेश कराया जाएगा। जल जीवन मिशन की 28 हजार 471 करोड़ की 15 हजार 450 समूह पेयजल परियोजनाओं का भूमि-पूजन होगा।

टीम तोमर
चुनाव की तैयारी में प्रदेश भाजपा

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय में आज मीडिया विभाग की कामकाजी बैठक संपन्न हुई। बैठक में केन्द्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव प्रभारी भूपेंद्र यादव ने मीडिया टीम से नवागत चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक नरेंद्र सिंह तोमर का परिचय कराया एवं उनके नेतृत्व में भविष्य में कार्य करने की सलाह दी। इस अवसर पर प्रदेश चुनाव सह प्रभारी अश्विनी वैष्णव, राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल, पूर्व मंत्री अर्चना चिटनीस, पूर्व मीडिया प्रभारी गोविंद मालू, हितेश वाजपेयी सहित मीडिया के क्षेत्र में कार्यरत भाजपा के कार्यकर्ता मौजूद थे।

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

आज प्रात: निवास पर केंद्रीय श्रम एवं रोजगार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री @byadavbjp जी ने सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर राज्य के कल्याण और विकास कार्यों से जुड़े विभिन्न विषयों पर उनके साथ सार्थक चर्चा हुई।

Translate Tweet

बड़वानी में खतरे के निशान से 4 मीटर ऊपर नर्मदा, आज 31 जिलों में अलर्ट

भोपाल। मध्यप्रदेश के आधे से ज्यादा हिस्से यानी 31 जिलों में रविवार को भारी बारिश का अलर्ट है। विदिशा, रायसेन, अशोकनगर, शिवपुरी, दतिया, मुरैना, श्योपुर, सिंगरौली, सीधी, रीवा, सतना, डिंडोरी और सिवनी में बारिश के साथ बिजली भी गिर सकती है। भोपाल, उज्जैन, नर्मदापुरम, जबलपुर, सागर, शहडोल संभाग के कुछ जिलों में तेज बारिश का अनुमान है। इंदौर-उज्जैन शहर में हल्की बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के मुताबिक, प्रदेश में अभी 3 सिस्टम एक्टिव हैं। इस कारण अधिकतर जिलों में बारिश हो रही है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक एचएस पांडे ने बताया कि यह दौर आगे भी जारी रहेगा।

चंद्रयान-3 पृथ्वी की अगली कक्षा में पहुंचा

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों ने शनिवार को चंद्रयान-3 की पहली ऑर्बिट रेजिंग की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया। यानी

चंद्रयान अब पृथ्वी की अगली और पहले से बड़ी कक्षा में पहुंच गया है। ये प्रोसेस इसरो के बेंगलुरु स्थित टेलीमेट्री ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क से कंट्रोल की गई। 31 जुलाई तक ऑर्बिट रेजिंग की प्रक्रिया 4 बार और की जाएगी। इसरो ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया, 'चंद्रयान-3 सही कंडीशन में है। यान एक ऐसी ऑर्बिट (कक्षा) में है, जो पृथ्वी से सबसे नजदीक होने पर 173 किलोमीटर और सबसे दूर होने पर 41,762 किलोमीटर की दूरी पर है।

ओम प्रकाश राजभर एनडीए में शामिल

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पहले सत्ता पक्ष और विपक्ष ने तैयारियां तेज कर दी हैं। बेंगलुरु में जहां 17 और 18 जुलाई को विपक्षी दलों की बैठक होने जा रही है, वहीं 18 को राजधानी दिल्ली में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की बैठक बुलाई गई है। बैठक में भाजपा के पुराने साथियों के साथ ही कुछ नए दलों को भी न्योता दिया गया है।

इस बीच, यूपी में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख ओम प्रकाश राजभर के एनडीए में शामिल होने की पुष्टि हो गई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार सुबह ट्वीट कर बताया, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन में शामिल होने का फैसला किया है। मैं एनडीए परिवार में उनका स्वागत करता हूं।

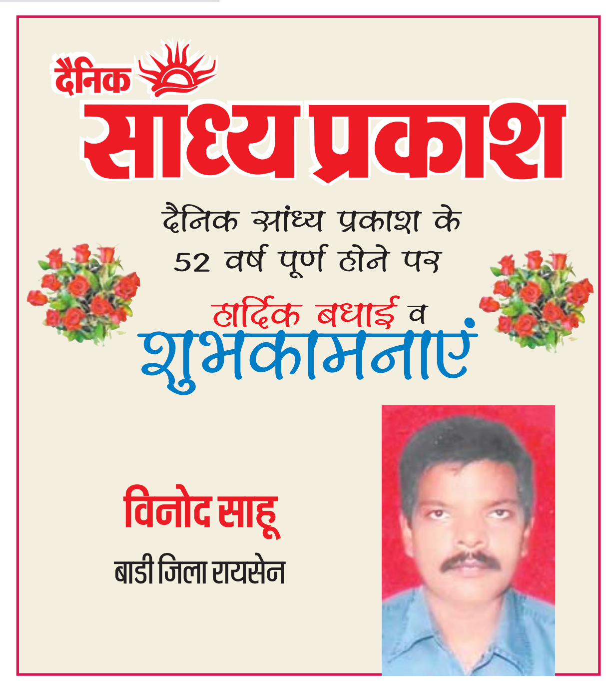

अलास्का में भूकंप के तेज झटके, 7.4 तीव्रता, सुनामी का अलर्ट जारी

न्यूयार्क। अमेरिकी राज्य अलास्का में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 7.4 रही। अमेरिका के सुनामी वॉर्निंग सिस्टम ने भी अलर्ट जारी किया है। यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे के मुताबिक, भूकंप का केंद्र जमीन से 9.3 किमी की गहराई पर था।

80 रुपये किलो टमाटर बेच रही सरकार, कई केंद्रों पर बिक्री शुरू

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दिल्ली-एनसीआर और कुछ अन्य क्षेत्रों में रविवार से टमाटर 80 रुपये किलोग्राम के भाव पर बेचने की घोषणा की। टमाटर की ऊंची कीमतों से आम लोगों को राहत देने के लिए पहले सरकार इसकी बिक्री 90 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर कर रही थी। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को दिल्ली-एनसीआर में मोबाइल वैन के जरिये रियायती 90 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर टमाटर की बिक्री शुरू की थी। शनिवार को इसमें और शहर जोड़े गए, जहां रियायती दरों पर टमाटर की बिक्री शुरू की गई। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है, सरकार के हस्तक्षेप के बाद टमाटर की थोक कीमतों में कमी आई है।

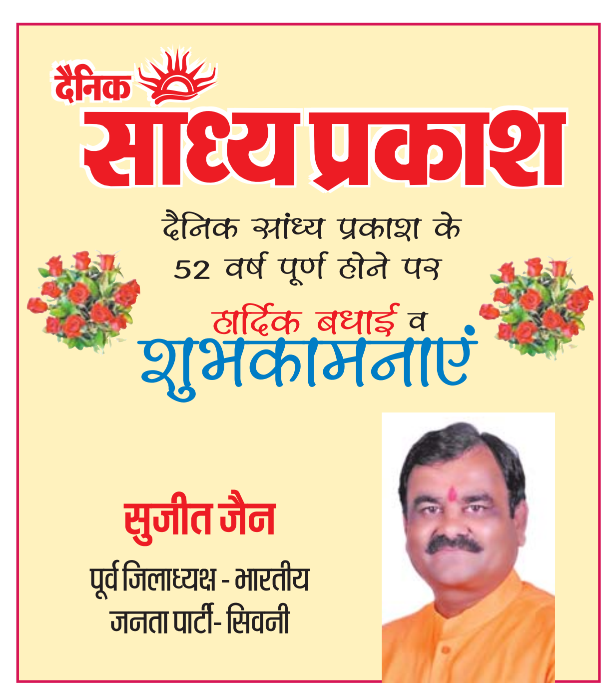

मुख्यमंत्री चौहान ने घर पहुंचकर दी जावेद भाई को श्रद्धांजलि, पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित किया

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राजधानी के व्यवसायी और समाजसेवी श्री जावेद भाई के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए उनके कोहेफिजा स्थित निवास पहुंचकर उनके अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने श्री जावेद भाई की पार्थिव देह पर पुष्प-चक्र अर्पित किया।

जावेद भाई कुछ समय से अस्वस्थ थे। भोपाल पैर मुंबई में उपचार के बाद श्री जावेद भाई (कंजे मियां) का मुम्बई के जसलोक अस्पताल में कल निधन हो गया था। श्री जावेद भाई क़रीब 63 साल के थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने जावेद भाई के पुत्र इब्राहिम, इस्माइल और जैद के साथ ही अन्य परिजन से भी भेंट कर उन्हें सांत्वना दी। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुरेश पचौरी, भोपाल के पूर्व महापौर श्री आलोक शर्मा, श्री सुनील सूद आदि उपस्थित थे।

कठिन टॉस्क उनके लिए सरल था

श्री चौहान ने श्री जावेद भाई को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनके लिए कठिन टॉस्क भी सरल था। महत्वपूर्ण आयोजन हों तो श्री जावेद भाई को व्यवस्थाओं के लिए संदेश भेजकर सभी निश्चिंत हो जाते थे। वे स्वभाव से सरल थे और सभी को स्नेह करते थे। वे असमय हमारे बीच से चले गए हैं। वे शहर में इस तरह रचे बसे थे कि भोपाल सूना हो गया है। मुख्यमंत्री से कोहेफिजा में श्री जावेद भाई के निवास पर सांत्वना व्यक्त करने पहुंचे विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और अनेक गणमान्य नागरिकों ने भी भेंट की।

वरुण देव भगवान झूलेलाल चालीहा साहब उत्सव मेले का आज से होगा शुभारंभ

सिंधी समाज द्वारा 40 दिनों तक उपवास रखकर की जाएगी कठोर तपस्या

संत हिरदाराम नगर। सिंधी समाज के इष्टदेव भगवान झूलेलाल चालीहा महोत्सव का 16 जुलाई से शुभारंभ होने जा रहा है। संत नगर के झूलेलाल मंदिरों में रोजाना उत्सव का माहौल होगा। रोजाना धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे।

न्यू-बी-10 स्थित चालीहा साहब मंदिर समिति द्वारा धूमधाम से महोत्सव मनाया जाएगा। साबूमल रीझवानी ने बताया कि नंदवानी भवन में सुबह 12 बजे महोत्सव का शुभारंभ किया जाएगा। 40 दिवसीय चालीहा साहब का उपवास धारण कर, संकल्प लेने हेतु अखंड ज्योत की स्थापना व ब्राहम्णों साहब की पूजा अर्चना के साथ शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर वेदांत संत लाल सांई तथा सांई वासु राम दरबार के गादीनशीन, सांई पुरुषोत्तम वासवानी के सानिध्य में संपन्न किया जाएगा। जहां भगवान झूलेलाल के भजन, लोकगीत, संगीत, नृत्य आरती तथा देश की खुशहाली व जन कल्याण हेतु सामूहिक प्रार्थना कर धार्मिक आयोजन किए जायेंगे। इस बार कई महिलाएं भी पूर्ण श्रद्धा से पूज्य बहिराणा साहिब की पूजा कर, उपवास ग्रहण करेगी। मुख्य कार्यक्रम के पूर्व सुबह 9 बजे मंदिर परिसर में स्वामी नारायण दास शर्मा, विविधत पूजा अर्चना कराकर, समस्त व्रतधारियों को चालीहे साहब के महत्व, श्रद्धा, विधि एवं मनोकामना पूर्ण करने हेतु पल्लव की जानकारी भी देंगे।

एच वार्ड स्थित झूलेलाल मंदिर में होगा महोत्सव का शुभारंभः पूज्य झूलेलाल चालीहा साहिब उत्सव समिति द्वारा भगवान झूलेलाल चालीहा साहिब मेले का आयोजन 16 जुलाई दोपहर 12 बजे झूलेलाल मंदिर एच वार्ड में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के शुभारंभ में वरुण देव भगवान झूलेलाल के बहिराणा साहिब की ज्योत प्रज्जवलित कर भजन, कीर्तन, छेज, डांडिया, नृत्य, सुखो सेसा का आयोजन रखा गया है। इसके उपरांत भगवान झूलेलाल के बहिराणा साहिब की ज्योत, शीतलदास की बगिया, कमला पार्क पर देश की एकता, अखंडता, खुशहाली के लिए भगवान वरुण देव की पूजा अर्चना कर बहिराणा साहिब की ज्योति विसर्जित की जाएगी। यह कार्यक्रम लगातार 40 दिन तक झूलेलाल मदिर एच वार्ड में चलता रहेगा। इस अवसर पर सांई सुल्तानपुर वाले, सांई लख्मीगिर साहिब एवं सांई बंटी गिर साहिब अपना प्रवचन व आशीर्वाद देंगे।

संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय में विश्व युवा कौशल दिवस मनाया

संत हिरदाराम नगर। संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय के ई-सेल व नवाचार काउन्सिल ने विश्व युवा कौशल दिवस मनाया। इस वर्ष की थीम 'शिक्षकों, प्रशिक्षकों व युवाओं को कौशल सिखाना- एक परिवर्तनकारी भविष्य के लिए' थी। महाविद्यालय में इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं को बिजनेस प्लान बनाना सिखाया गया। प्रो. चित्रा वाधवानी, वाणिज्य विभाग ने पॉवर पाइन्ट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से छात्राओं को एक प्रभावशाली योजना बनाने के विभिन्न चरण विस्तार से समझाए। छात्राओं ने भी एक विस्तृत योजना बनाकर अपनी समझ को सुदृ? किया। शिक्षा विभाग ने मायगवर्मेंट के साथ एक शॉट वीडियो कॉम्पीटिशन ''एन.ई.पी. की समझ आयोजित किया था जिसमें महाविद्यालय की अनेक छात्राओं ने भाग लिया एवं उत्कृष्ट 7 वीडियो वेबसाइट पर अपलोड किए गए। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. डालिमा पारवानी ने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें समय के अनुसार कौशल को अपनाने के लिए प्रेरित किया। किताबी ज्ञान के साथ-साथ उसे अपने व्यवसाय में अपनाकर कौशल विकसित करना सफलता के लिए बहुत आवश्यक है।

नव युवक सभा के स्कूलों में छात्र परिषद के चुनाव हुए संपन्न

संत हिरदाराम नगर। नवयुवक सभा द्वारा संचालित अनन्दराम टी. शाहानी कन्या उ.मा. विद्यालय एवं सिंधु माध्यमिक विद्यालय में छात्र परिषद के चुनाव संपन्न कराए गए। विद्यालय की प्राचार्या द्वारा अपने उद्बोधन में प्रजातंत्रिक प्रणाली द्वारा किस तरह चुनाव किया जाता है वह अपने नेता को चुनते समय किस बिंदु को ध्यान रखा जाता है विद्यार्थियों को अवगत कराया गया। अनन्दराम टी. शाहानी कन्या उ. मा. विद्यालय के छात्र परिषद का चुनाव सभी की सहमति व सिंधु माध्यमिक विद्यालयों का चयन मेरिट सूची के आधार पर किया गया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष शिक्षाविद विष्णु गेहानी ने उद्बोधन में चुनाव प्रक्रिया को समझाया चयनित छात्रों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की एवं सभा के संरक्षक वासदेव वाधवानी व सचिव सुरेश राजपाल ने चयनित उम्मीदवारों को बधाई देते हुए अपने उद्बोधन में हार और जीत को एक जैसा लेते हुए आगे ब?ने व स्कूल अनुशासन को बनाये रखने के लिए प्रेरणा दी।

बैरागढ़ गांव और भैंसाखेड़ी को बैरागढ़ थाने से जोड़ने की मांग

संत हिरदाराम नगर। बैरागढ़ कलां और भैंसाखेड़ी को संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ थाने से जोड़ने की मांग रहवासियों द्वारा की जा रही है। भारतीय जनता पार्टी मंडल के पूर्व मंत्री वीरा स्वामी ने कहा है कि बैरागढ़ गांव और भैंसाखेड़ी को बैरागढ़ थाने में जोड़ा जाए क्योंकि खजूरी तक लगभग 8 से 10 किलोमीटर की दूरी होने के कारण कोई भी घटना होने पर खजूरी थाने जाना पड़ता है। वहां से पुलिस आने को लगभग आधा घंटा लग जाता है। कोई भी घटना होती है तो रिपोर्ट लिखवाने के लिए लिए खजूरी थाने जाना पड़ता है जबकि बैरागढ़ थाना करीब प?ता है इसलिए बैरागढ़ गांव और भैंसाखेड़ी को खजूरी थाने से हटाकर बैरागढ़ थाने में जोड़ा जाए।

नैनागिरी में 25 लाख की लागत से बनेगी सीमेंट कांक्रीट सड़क

भोपाल। विधायक कृष्णा गौर ने जोन क्र. 15 के अंतर्गत वार्ड क्र. 66 के नैनागिरी में क्षेत्रीय पार्षद जितेन्द्र सिंह की उपस्थिति में सीमेंट कांक्रीट सड़क हेतु भूमिपूजन किया। इस अवसर पर पार्षद उर्मिला मौर्य, पूर्व पार्षद लक्ष्मी ठाकुर, मनोज विश्वकर्मा, राकेश राजपूत एवं लवकुश यादव सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद थे। विधायक श्रीमती कृष्णा गौर ने शनिवार को जोन क्र. 15 के अंतर्गत वार्ड क्र. 66 के नैनागिरी में क्षेत्रीय पार्षद जितेन्द्र सिंह की उपस्थिति में लगभग 25 लाख रूपये की लागत से होने वाले सीमेंट कांक्रीट सड़क हेतु भूमिपूजन किया। इस अवसर पर श्रीमती गौर ने कहा कि क्षेत्र के समुचित विकास के लिए हम सदैव तत्पर हैं। भविष्य में भी नागरिकों की आवश्यकतानुसार विकास के कार्य किये जाते रहेंगे। इस अवसर पर क्षेत्रीय रहवासियों ने विधायक श्रीमती गौर एवं क्षेत्रीय पार्षद जितेन्द्र सिंह का आभार व्यक्त किया।

पटवारी परीक्षा के विरोध की तख्तियां हाथों में लेकर सड़कों पर उतरे विद्यार्थी

संत हिरदाराम नगर। मध्यप्रदेश में पटवारी भर्ती घोटाले को लेकर शनिवार को शिक्षाविद आनंद सबधाणी के नेतृत्व में गुफा मंदिर रोड से लेकर लालघाटी चैराहे तक सैक?ों की संख्या में छात्र-छात्राए ने हाथ में विरोध की तख्तियां लेकर पैदल मार्च कर शासन के खिलाफ अपना विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन को लेकर सबधाणी ने कहा कि मध्य प्रदेश में पटवारी की परीक्षा में हुए भ्रष्टाचार के कारण संपूर्ण परीक्षा रद्द कर दुबारा होनी चाहिए एवं आने वाले समय में होने वाले कांस्टेबल, एस.आई. आदि प्रादेशिक परीक्षाओं में पारदर्शिता बरती जाए, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गौरतलब है कि पिछले दिनों पटवारी परीक्षा के परिणामों में कालेज से एक साथ 7 अभ्यर्थी टॉप टेन सूची में शामिल हो गए थे जिसके कारण पूरे देश व प्रदेश में इस तरह के प्रदर्शन छात्र-छात्राओं द्वारा किया जा रहा है। इस प्रदर्शन में युवा कांग्रेस के नेता भी शामिल हुए थे।

पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं उनकी समुचित देखभाल भी करें:

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

पौधारोपण स्थलों का लिया जायजा

निगम आयुक्त के.वी.एस.चौधरी ने स्वच्छ पर्यावरण के दृष्टिगत वृहद स्तर पर किये गये पौधारोपण स्थलों का निरीक्षण किया और रोपित किये गये पौधों एवं प्रस्तावित पौधारोपण के संबंध में अधिकारियों से विस्तारपूर्वक चर्चा की। निगम आयुक्त चौधरी ने रिक्त भूमि पर नये पौधे रोपित करने, रोपित किये गये पौधों में आवश्यकतानुसार जैविक खाद, मिट्टी डालने, उनकी निरंतर निदाई, गुड़ाई करने एवं पौधारोपण स्थल से गाजर घास, झाड़ियां आदि हटाने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त चौधरी ने एपको कार्यालय के पीछे शाहपुरा झील से लगी खुली भूमि का लेआउट तैयार कर उसके अनुसार चूने की लाईन डालकर व्यवस्थित रूप से गड्ढे, थाले बनाकर शीघ्र पौधारोपण कार्य प्रारंभ करने के निर्देष दिए। निरीक्षण के दौरान अधीक्षण यंत्रीद्वय संतोष गुप्ता, शैलेन्द्र श्रीवास्तव, कार्यपालन यंत्री अल्पना सक्सेना सहित निगम के अन्य अधिकारी मौजूद थे।

निगम आयुक्त के.वी.एस. चौधरी ने शनिवार को स्वच्छ पर्यावरण के दृष्टिगत सघन एवं वृहद स्तर पर किये गये पौधारोपण स्थलों का निरीक्षण किया और रोपित किये गये पौधों एवं प्रस्तावित पौधारोपण के संबंध में अधिकारियों से विस्तारपूर्वक चर्चा की। निगम आयुक्त श्री चौधरी ने स्मार्ट सिटी एडीबी क्षेत्र में स्थित उद्यान एवं वृक्षारोपण स्थलों का जायजा लिया और रिक्त भूमि पर नये पौधे रोपित करने, रोपित किये गये पौधों की पर्याप्त देखभाल, आवश्यकतानुसार जैविक खाद, मिट्टी डालने, उनकी निरंतर निदाई, गुड़ाई करने एवं पौधारोपण स्थल से गाजर घास, झाड़ियां आदि हटाने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री चौधरी ने प्लेटिनम प्लाजा के सामने कबाड़ से जुगाड़ अंतर्गत स्थापित वीणा के सामने फेसिंग से लगी भूमि पर कोनो कार्पस के पौधे रोपित करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त चौधरी ने बढ़ते हुए पौधों की छटाई कर उन्हें अच्छा आकार प्रदान करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री चौधरी ने लाड़ली लक्ष्मी वाटिका में रोपित किये गये आम के पौधों का अवलोकन किया और पौधों को अच्छा विकसित करने हेतु पौधों की निदाई, गुड़ाई कर घास एवं अनावश्यक पौधों को हटाकर साफ-सफाई करने एवं जो पौधे खराब हो गये हैं उनके स्थान पर तत्काल नये पौधे रोपित करने के निर्देश दिए।

निगम आयुक्त श्री चौधरी ने चूना भट्टी में प्रस्तावित वृक्षारोपण स्थल से अवैध अतिक्रमण हटाकर फेसिंग करने एवं भूमि को पौधारोपण हेतु तैयार करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री चौधरी ने एपको कार्यालय के पीछे शाहपुरा झील से लगी खुली भूमि का निरीक्षण किया और भूमि का लेआउट तैयार कर उसके अनुसार चूने की लाईन डालकर व्यवस्थित रूप से गड्ढे, थाले बनाने एवं जैविक खाद एवं मिट्टी डालकर स्थल पर शीघ्र पौधारोपण कार्य प्रारंभ करने के निर्देष दिए।

लाड़ली बहना योजना ने बहनों को आत्मबल प्रदान किया: शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री ने आष्टा में लाड़ली बहना सम्मेलन में की घोषणाएं

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि लाड़ली बहना योजना के रूप में मैंने एक हजार रुपए ही नहीं, सही मायनों में बहनों को इज्जत, सम्मान तथा आत्मबल प्रदान किया है और वचन देता हूँ कि कभी भी बहनों का सिर नहीं झुकने दूंगा। मुख्यमंत्री शनिवार को आष्टा के श्यामा प्रसाद मुखर्जी मैदान में भाई-बहनों, युवाओं और किसानों से संवाद कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने आष्टा के विकास के लिए अनेक विकास और निर्माण कार्यों के साथ आष्टा में पूर्व प्रधानमंत्री भारत-रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा लगाने और 3 नये सीएम राइज स्कूल खोलने की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बहनों से कहा कि उन्हें गरीब नहीं रहना है। मेरी कोशिश है कि स्व-सहायता समूह को आंदोलन बनाकर बहनों की आमदनी 10 हजार रुपए करना। प्रदेश के ऐसे सभी टोल नाके, जिनकी वार्षिक आमदनी 2 करोड़ है, का संचालन बहनों को सौंपा जायेगा। ला?ली बहना योजना जिंदगी बदलने की योजना है और मैं 250 रुपए के मान से ब?ाकर योजना की 1000 रूपये की राशि को 3000 रुपए तक ले जाऊंगा। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी जरूरतों की पूर्ति के लिए मजबूर रहने वाली बहनें अब मजबूत हुई हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आष्टा में आष्टा नगर पालिका में 5 और अन्य नगर परिषदों में एक-एक करोड़ रुपए के निर्माण कार्य करवाए जाने, नर्मदा-पार्वती और काली सिंध लिंक सिंचाई योजना में छूटे गाँव को भी जोड़े जाने और योजना के शेष कार्य पूरे करवाने की घोषणा की। उन्होंने 3 सीएम राइज स्कूल के निर्माण और कन्या छात्रावास और आश्रम के विस्तार की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने उन्हें भेंट किए गए चांदी के दो मुकुट आयोजकों को सौंप कर उनकी बिछिया बनवा कर कन्या विवाह योजना में बेटियों को भेंट करने को कहा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि वे मुख्यमंत्री नही सेवक है, उनका जन्म किसान परिवार में हुआ है, जितनी भी उनकी जिंदगी है, उसे वे जनता की जिंदगी बदलने में लगाएंगे। उनका मकसद किसान, बहन बेटियों, भाईयो तथा नौजवानों की जिंदगी बदलकर मध्यप्रदेश को बेहतर बनाना है।

मुख्यमंत्री ने पूर्ववर्ती सरकार द्वारा किसानों की कर्जमाफी नहीं करने सहित कई योजनाओ को बंद करने का हवाला दिया और कहा कि प्रदेश और केंद्र सरकार ने गरीब कल्याण को ही अपना लक्ष्य बनाया है। गरीबों को मुफ्त में राशन, इलाज के लिए आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री आवास योजना, हर घर नल से जल, जैसी अनेक योजनाओं से आमजन की जिंदगी बदली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्हें हर वर्ग की चिंता है, युवाओं के लिए प्रारंभ की गई मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना रोजगार की दिशा में अभूतपूर्व कदम है। एक लाख सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती जारी है, अब तक 55 हजार नौकरी दी जा चुकी हैं। मुख्यमंत्री ने उद्यम क्रांति योजना को भी युवाओं की जिंदगी बदलने वाली योजना बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने बहन-बेटियों की सुरक्षा के मद्देजनर शराब दुकानों के अहाते बंद किए हैं। बारहवीं में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले बेटे-बेटियों को जल्दी ही लैपटाप के लिए 25 हजार की राशि दी जायेगी। स्कूल में टॉप करने वाले प्रत्येक बालक और बालिका को स्कूटी देंगे। मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे बच्चे, जो उच्च शिक्षा के लिए कॉलेजों में पढ़ेंगे, उनकी फीस सरकार जमा करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बेटियों और बहनों को मजबूर से मजबूत बनाने के लिए उन्होंने लाड़ली लक्ष्मी, कन्या विवाह, प्रतिभा किरण जैसी योजनाओं के साथ स्थानीय निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत पद देकर विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की है। पुलिस सहित अन्य सेवाओं में महिलाओं के लिए नौकरी सुरक्षित की है।

विनियमित कर्मचारियों को नियमित करने सहित 19 सूत्रीय मांग पत्र सौंपा

जागरूक अधिकारी-कर्मचारी संयुक्त समन्वय कल्याण समिति के पदाधिकारी मुख्यमंत्री से मिले

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

जागरूक अधिकारी कर्मचारी संयुक्त समन्वय कल्याण समिति के प्रदेश संयोजक प्रमोद तिवारी, प्रदेश अध्यक्ष उदित भदौरिया, कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष अरुण द्विवेदी, नगर निगम, नगर पालिका के प्रदेश अध्यक्ष अशोक वर्मा, भोपाल जिला अध्यक्ष नवल गोरे, श्रीमती प्रेमलता गुप्ता, मंजू श्रीवास्तव, सरोज विलखरे, स्थाई कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष शारदा सिंह परिहार ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास में प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर प्रदेश के अधिकारी-कर्मचारियों की 19 सूत्री लंबित मांगों का ज्ञापन सौंपकर मांगों पर चर्चा। मुख्यमंत्री को सौंपे ज्ञापन में जिन मांगों को प्रमुखता से उठाया गया है उनमें पुरानी पेंशन बहाली, सेवानिवृत्ति आयु 62 से बढ़ाकर 65 वर्ष करने, पदोन्नति के अवसर तत्काल खोले जाने, जिन संवर्ग को कि प्रदेश में डीपीसी हो चुकी है उनके पदोन्नति आदेश जारी किए जाने, नगर निगम विनियमित कर्मचारियों को नियमित किये जाने, अतिथि शिक्षक और अतिथि विद्वानों को नियमित किया जाने, जॉब दर पर कार्यरत कंप्यूटर ऑपरेटरों को नियमित किया जाने, नगर पालिका-नगर निगम में दैनिक कर्मचारियों को नियमित एवं संविदा कर्मचारियों को अधिकार दिए जाने, स्थाई कर्मियों को नियमित करने आदि मांग शामिल हैं।

बिना भेदभाव सभी लोगों के बन रहे पक्के मकान: गोविंद सिंह राजपूत

बिलहरा तथा सुरखी में प्रधानमंत्री आवास योजनांतर्गत हितग्राहियों के खातों में 6.68 करोड़ की राशि हस्तांतरित की

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

प्रदेश के राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने सुरखी विधानसभा के बिलहरा तथा सुरखी में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री आवास योजनांतर्गत पात्र हितग्राहियों को किस्त की राशि हस्तांतरित की। श्री राजपूत ने बिलहरा तथा सुरखी हितग्राहियों को सिंगल क्लिक के माध्यम से 6.68करो? की धनराशि उनके खाते में ट्रांसफर की। संबल योजना के तहत 1करोड़ 5 लाख की राशि संबल कार्ड धारकों के खाते में डाली सभी कार्यकर्ताओं का तथा क्षेत्र वासियों का भाजपा का गमछा पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर श्री राजपूत ने कहा कि आज सुरखी विधानसभा क्षेत्र में परिवारों को आवास का लाभ मिला है। भाजपा की सरकार ने बिना भेदभाव किए हर परिवार को प्रधानमंत्री आवास का लाभ दिया है बिना भेदभाव सबका विकास हमारा संकल्प है जो क्षेत्र में देखा जा सकता है। हर परिवार के पास खुद का पक्का मकान हो यह हर व्यक्ति का सपना होता है, यह सपना बीजेपी की सरकार ने सच करके दिखाया है।

श्री राजपूत ने कहा कि अभी कांग्रेस के लोग कह रहे हैं कि ला?ली बहना योजना में वह 1500 रूपए प्रतिमाह देंगे। उन्होंने कहा कि आप उसमें विश्वास कीजिए जो मिल रहा है, जो कांग्रेस बोल रही है वह झूठ बोल रही है, जैसे किसानों के कर्जमाफी की बात कह कर कांग्रेस ने वोट ले ली फिर किसानों को डिफाल्टर बना दिया। इसी तरह के लुभावने वादे करके आपको भ्रमित करने के लिए लोग आएंगे लेकिन आपको विकास का साथ देना है विकास करने वाली सरकार को चुनना है भाजपा की सरकार ने हर व्यक्ति हर वर्ग को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाई है इन कल्याणकारी योजनाओं से हर वर्ग को लाभ मिल रहा है अपने क्षेत्र का विकास सुनिश्चित करे।

भारत का विश्व में बढ़ा है मान: सुरखी में आयोजित शक्ति केंद्र की बैठक मे शामिल हुए राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बैठक में सभी कार्यकर्ताओं का भाजपा का गमछा पहना कर स्वागत किया। इस अवसर पर मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का मान पूरे विश्व में बड़ा है विकास कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं से हर व्यक्ति हर वर्ग को लाभ मिल रहा है। इस अवसर भाजपा नेता लखन चौबे ,राकेश तिवारी ,मनीष गुरु, नर्मदा सिंह, सरवन सिंह ,महाराज सिंह अरुण गोतम ,कमलेश पांडे, मंडल अध्यक्ष जगदीश लोधी युवा, मोर्चा अध्यक्ष संदीप ठाकुर सहित क्षेत्रवासियों भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

युवा पत्रकारों के लिए प्रेरणा रहेंगे अंशुमन भार्गव: प्रह्लाद पटेल

भार्गव के आलेखों के संकलन 'बाय द वे' का विमोचन

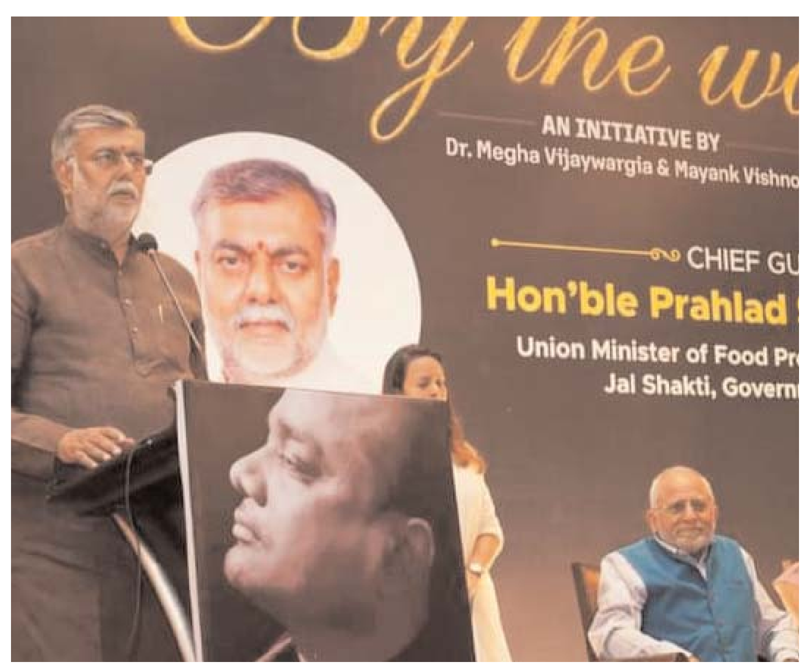

भोपाल। शनिवार को वरिष्ठ पत्रकार अंशुमन भार्गव के आलेखों के संकलन 'बाय द वे' का विमोचन केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल के हाथों होटल कोर्टयार्ड मैरियट में हुआ। डॉ मेघा विजयवर्गीय और श्री मयंक विश्नोई की पहल पर कॉफ़ी टेबल बुक के रूप में इन आलेखों का संकलन किया गया है। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि अंशुमन भार्गव का लेखन बहुत ही प्रभावशाली था। उन्हें समसामयिक मामलों के अलावा पर्यटन, पर्यावरण और सामाजिक विकास जैसे मुद्दों की भी गहरी समझ थी। वे युवा पत्रकारों के लिए हमेशा प्रेरणा रहेंगे। खास बात ये है कि एक पत्रकार के लेखों पर पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। उन्होने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से वे अपने मित्रों, शुभचिंतकों और पाठकों के दिलों में हमेशा एक सुंदर स्मृति बनकर रहेंगे। मैं मेघा विजयवर्गीय और मयंक विश्नोई को भी उनकी इस सराहनीय पहल के लिए दिल से बधाई देता हूं।

कुछ लोग अपने शब्दों से जागृति की मशाल जलाते हैं। उनके जाने के बाद भी ये मशाल समाज में रोशनी फैलाती रहती है। कुछ ऐसी ही मशाल जलाई थी वरिष्ठ पत्रकार अंशुमन भार्गव ने अपने कॉलम 'बाय द वे' के माध्यम से। उनके कॉलम में छपे आलेखों को कॉफ़ी टेबल बुक के रूप में संकलित करने की पहल की डॉ मेघा विजयवर्गीय एवं श्री मयंक विश्नोई ने की। ये उनकी तरफ से इस विलक्षण पत्रकार को एक भावभीनी श्रद्धांजलि भी है।

इस अवसर पर स्वर्गीय अंशुमन भार्गव के भाई अम्बुज भार्गव ने कहा अंशुमन अपने काम को लेकर हमेशा उत्साही रहे। अस्पताल में भर्ती होने के बाद भी उन्होंने कभी भी अपने आलेखों से समझौता नहीं किया। मैं मेघा जी और मयंक जी का आभारी हूं कि उन्होंने इस किताब के द्वारा उनकी लेखनी को अमर कर दिया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार गिरिजाशंकर, महेश श्रीवास्तव, ललित शास्त्री, मयंक विश्नोई एवं डॉ मेघा विजयवर्गीय मंचासीन थे, अन्य अतिथियों में मनोज श्रीवास्तव, राकेश पाठक, उपेन्द्र जैन, मनीष शंकर शर्मा, अवधेश प्रताप सिंह, एनके सिंह, अरुण दीक्षित, विजय तिवारी, संजय सक्सेना, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष लखन सिंह मीना, प्रसिद्ध भजन गायक सत्यनारायण नायर के साथ ही अंशुमन भार्गव के पूर्व सहयोगी, मीडिया जगत की बड़ी हस्तियां, उनके परिवार के सदस्य और शहर के अन्य गणमान्य अतिथि मौजूद रहे।

ऑनलाइन आवेदन कर जुड़वा सकते हैं मतदाता सूची में नाम

भोपाल। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश अनुपम राजन ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची में नाम जो?ने के लिए मतदाताओं को ऑनलाइन सुविधा भी प्रदान की गई है। कोई भी व्यक्ति घर बैठे ऑनलाइन आवेदन कर अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वा सकता है। इसके लिए संबंधित व्यक्ति को भारत निर्वाचन आयोग के पोर्टल पर जाना होगा। मतदाता सूची में नाम जो?ने के लिए फॉर्म-6, हटाने के लिए फॉर्म-7 और संशोधन के लिए फॉर्म-8 भरना होगा। इसके अलावा मतदाता अपने फॉर्म की स्थिति, मतदाता सूची में उसका नाम जुड़वा है या नहीं, उसके बारे में भी पता लगा सकते हैं। साथ ही अपने विधानसभा क्षेत्र, पोलिंग स्टेशन और बूथ लेवल अधिकारी के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। भारत निर्वाचन आयोग के पोर्टल की तरह वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से भी मतदाता अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। यह भी भारत निर्वाचन आयोग का ही एप है। इसे मोबाइल के प्ले स्टोर पर जाकर डाउनलोड करना होगा।

ऑफलाइन के लिए बीएलओ से करें संपर्क

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी राजन ने बताया कि मतदाता ऑफलाइन भी आवेदन देकर अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वा सकते हैं। इसके लिए उन्हें आवेदन भरकर अपने मतदान केंद्र के बीएलओ के पास जमा करना होगा। उन्होंने बताया कि 2 अगस्त से शुरू हो रहे मतदाता सूची के द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के दौरान सभी बीएलओ अपने अपने मतदान केंद्र पर कार्यालयीन समय पर सुबह से शाम तक बैठेंगे। मतदाता वहां पर जाकर आवेदन दे सकते हैं।

घर पहुंचेगा मतदाता परिचय पत्र

भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाताओं का परिचय पत्र स्पीड पोस्ट के माध्यम से घर तक पहुँचाने की सुविधा प्रदान की है। मतदाता सूची में नाम जुड़ जाने के बाद संबंधित मतदाता का मतदाता परिचय पत्र स्पीड पोस्ट के माध्यय से उनके द्वारा दिए गए पते पर पहुँचेगा। वोटर आईडी कार्ड के लिए मतदाता को परेशान भी नहीं होना पडेगा।

सावन की फुहारों के बीच गीत, संगीत एवं नृत्य के साथ सजी अरेरा जंक शन की सुहानी शाम

6शोकिया फनकारों ने प्रस्तुत किये सावन के खूबसूरत नगमे, डांस पर थिरकने को मजबूर हुए लोग

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

सावन महोत्सव के अवसर पर रोटरी क्लब ऑफ भोपाल अरेरा द्वारा आयोजित संगीत संध्या शीर्षक गीत,तुझे गीतों मे ढा लूंगा सावन को आने दो, मेघा रे मेघा रे, लगी आज सावन की फिर वो झ?ी है, अबके सावन मे जी डरे जैसे मधुर गीतों के जादू बिखरे तो समुचा जनमानस मानो झूम उठा इस मधुर शाम मे अरेरा जंक शन के कलाकारों ने सावन महोत्सव का आगाज मधुर गीत संगीत एवं नृत्य के साथ खुशियाँ मनाकर किया कार्यक्रम मे मुख्य अथिति के तौर विवा इवेंट मैनेजमेंट के संचालक अनिल नागरूकर एवं सम्राट म्यूजिकल के संचालक सुनील शुक्रवारे विशेष रूप से उपस्थित थे। इस खूबसूरत शाम को आयोजित कार्यक्रम मे सर्वप्रथम माँ सरस्वती एवं पॉल हेरिस पर माल्यार्पण किया गया कार्यक्रम की शुरुआत हमको मनकी शक्ति देना गीत से हुई इस क?ी मे अनिल व पुष्पा चौहान ने सावन का महीना पवन करें शोर, सुनील शुक्रवारे ने ?ब दर्द नही था सीने मे सूर्यप्रकाश मुरसेनिया ने बरखा रानी जरा जमके बरसो, तोसीफ खान ने लगी आज सावन की फिर वो झ?ी है संजय व सपना सक्सेना ने रिमझिम रिमझिम भीगी भीगी रुत मे अनीस ने रिमझिम गिरे सावन, डाक्टर आर के रावले ने वो शाम कुछ अजीब थी, आर आर त्रिपाठी ने दीवाना मुझको लोग कहे उमेश अंजू मिश्रा रिमझिम के गीत सावन गाये आदि गाकर माहौल को खुशनुमा कर दिया कार्यक्रम मे 16शोकिया फनकारों के मधुर गीतों से समुचा कार्यक्रम स्थल तालियों की ग? ग?ा हट से गूँजता रहा

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रजवलित कर हमे इतनी शक्ति देना गीत से हुई सभी कलाकारों को स्मृति के रूप मे गि?्ट प्रदान कर सम्मानित भी किया गया इस अवसर पर संस्था की अध्यक्ष अमृता आशीष तिवारी ने कहा कि अरेरा जंक शन एक ऐसा प्लेटफार्म है जिसमे सम्मलित होकर शहर के कई गायक अपने गीतों के माध्यम से एवं डांस की अनूठी प्रस्तुतिया प्रस्तुत कर अपना जलवा बिखेर रहे हैं उन्होंने कहा कि हमारी संस्था मे दिनों दिन उत्कृष्ट कलाकारों का समावेश हो रहा है, हमें ऐसी प्रतिभा मिल रही जो अपने प्रदर्शन के बल बूते पर अपना ही नही शहर मे और शहर के बाहर भी वह सभी अपना जलवा बिखेर रही है

कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी रही की इसमें डाक्टर नुकुल ने माऊथ आर्गन पर कई मधुर गीतों की प्रस्तुति दी इसके साथ ही तेरे वास्ते आशीष, अभिलाषा एवं आदर्श ने सो?ी दे नखरे तथा अमृता व आशीष ने लाल दुपटे वाली तेरा नाम तो बता गीतों पर डांस प्रस्तुत कर उपस्तिथ जन को नाचने पर मजबूर कर दिया

असामाजिक बनाते डिजिटल गजेट्स

राकेश दुबे

यूँ तो डिजिटल गजेट्स में गुम होकर अपनी प्राथमिकताओं पर फोकस न कर पाने की उलझन हर आयु वर्ग के लोगों के हिस्से है पर युवा इस वर्चुअल भटकाव में जरा ज्यादा फंसे हैं। जबकि उम्र के इस पड़ाव पर हर पल भविष्य की बेहतरी में लगाने का है। अपने सपनों को पूरा करने में जुट जाने का है। ऐसे में नई पीढ़ी से फोकस्ड रहने की दरकार है।

सही मायने में तकनीक से मिली अनगिनत सुविधाओं के साथ-साथ जीवन की सहजता खो जाने की स्थितियां भी इन्सानों के हिस्से आई हैं। ज़िंदगी के हर पहलू को असहज करने वाले बहुत से खामियाजों में दिलो-दिमाग का ठहराव खो जाना सबसे ऊपर है।

जर्नल ऑफ कंप्यूटर असिस्टेड लर्निंग में प्रकाशित शोध के मुताबिक, आभासी दुनिया युवाओं को वास्तविक संसार से दूर कर रही है। अध्ययन में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े डिग्री कोर्स कर रहे 285 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। शोध में विद्यार्थियों द्वारा डिजिटल टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल के तरीके, चिंता, अकेलापन, पढ़ाई और प्रेरणा का आकलन करने पर शोधकर्ताओं ने पाया कि इंटरनेट की लत और पढ़ाई के लिए प्रेरणा के बीच एक नकारात्मक रिश्ता है। जिसका अर्थ है कि जिन विद्यार्थियों को इंटरनेट की लत पड़ जाती है, उनके लिए पढ़ाई करना कठिन हो जाता है। ऐसे छात्र-छात्राओं को परीक्षाओं में बेचैनी भी ज्यादा होती है। इतना ही नहीं, इंटरनेट की लत के कारण अकेलापन भी घेरता है। कुल मिलाकर उनकी मन:स्थिति अकादमिक गतिविधियों को मुश्किल बना देती है। जरूरी है कि डिजिटल दुष्प्रभावों के चक्रव्यूह में फंसे युवा चेतें। इंटरनेट के इस्तेमाल की लत और जरूरत का फर्क समझें।

इस अध्ययन में शामिल करीब एक-चौथाई विद्यार्थियों ने माना कि वे हर रोज 4 घंटे से ज्यादा समय ऑनलाइन बिताते हैं। वहीं अन्य विद्यार्थियों ने हर दिन 3 घंटे ऑनलाइन रहने की बात कही। इनमें से 40 प्रतिशत छात्र-छात्राएं इंटरनेट का इस्तेमाल सोशल नेटवर्किंग के लिए और 30 प्रतिशत अन्य जानकारियां जुटाने के लिए करते थे। जबकि मन को भटकाने के मामले में सोशल मीडिया पर की जा रहीं गतिविधियां सबसे आगे हैं। तकलीफदेह है कि सामाजिक जुड़ाव और अपरिचितों तक से बातचीत कर लेने की परिपाटी वाले भारतीय समाज में अब हर उम्र के लोग स्क्रीन में आंखें गड़ाये दिखते हैं।

रिसर्च फर्म रेडसियर के अनुसार, भारतीय यूजर्स हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन में झांकते रहते हैं। इनमें अधिकतर लोग टाइम सोशल मीडिया स्क्रोलिंग में लगे रहते हैं। इससे मन का उद्वेलन और शारीरिक परेशानियां हर आयु वर्ग में पैदा हो रही हैं। भविष्य बनाने की उम्र में युवाओं के पढ़ने-लिखने की दिनचर्या पर पड़ रहा दुष्प्रभाव चिंतनीय है पर इससे बचने की राह भी स्वयं युवाओं को तलाशनी होगी। सबसे जुड़कर खुद से दूर हो जाने की इन स्थितियों से बचने के लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। टाइम टेबल बनाकर उसे फॉलो करने से डिजिटल दुनिया के फायदे ज्यादा व नुकसान कम होंगे। इन माध्यमों का इस्तेमाल समय गंवाने में नहीं बल्कि पढ़ाई के बाद मिले समय में जरूरी इन्फर्मेशन जुटाने के लिए किया जा सकता है ।

इंटरनेट की लत इंसानी मन:स्थिति पर कई तरह से असर डालती है। वर्चुअल दुनिया में गुम रहना यूजर्स की प्रेरणा, योजना बनाना और संवेदनशील होकर सोचना सब कुछ कुंद कर देता है। विचलित मन के चलते पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित न कर पाना भी मनोवैज्ञानिक मोर्चे पर उपजे इस भटकाव का ही हिस्सा है। ज्ञात हो कि हाल के बरसों में बोर्ड एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले अधिकतर बच्चों और युवाओं ने भी माना है कि अपनी पढ़ाई पर फोकस करने के लिए वे लंबे समय तक वर्चुअल दुनिया से दूर रहे। पढ़ाई को अपनी प्राथमिकताओं की सूची में रखते हुए स्वानुशासन हेतु सोशल मीडिया से पूरी तरह दूरी बनाई। ऐसे में सभी यंगस्टर्स अपनी बदलती मन:स्थिति को समझें और सजग रहें। याद रहे कि सोच को दिशाहीन करने वाली कोई भी तकनीकी सुविधा जीवन को भी भटकाव के रास्ते पर धकेल देती है।

डिजिटल टेक्नोलॉजी का एक सीमा से ज्यादा इस्तेमाल करने वाले विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो जाती है। सामाजिकता की सोच सिमट जाती है। पढ़ाई में भी कमजोर होने से अपराधबोध और सामाजिक मेलजोल की कमी के चलते अकेलापन महसूस होने लगता है। जिसके चलते आभासी दुनिया में और ज्यादा समय बीतने लगता है। कुल मिलाकर यह दुश्चक्र सार्थक गतिविधियों के बजाय मन की उलझनों और व्यवहारगत मुश्किलों के घेरे में ले आता है। जिससे निकलना सरल नहीं। इसीलिए तकनीक के इस वर्चुअल जाल में फंसने से पहले चेत जाना आवश्यक है। अपनों से जुड़े रहने की कोशिशें आवश्यक हैं। स्क्रीन के पर्दे से परे दोस्तों के साथ समय बिताना और सहज दिनचर्या फॉलो करना भी सोशल लाइफ को बेहतर बनाता है।

किस्सा-ए-आईएएस: गरीबी से संघर्ष और विकलांगता के बावजूद आईएएस बनकर दिखाया

सुरेश तिवारी

यदि किसी में प्रतिभा है और अपने लक्ष्य को पाने की लगन है, तो उसे मुकाम हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता। क्योंकि, प्रतिभा कहीं भी हो उसकी चमक एक दिन सामने जरूर आती है। रमेश घोलप उसी प्रतिभाशाली शख्स का नाम है, जो महाराष्ट्र के एक बहुत छोटे से गांव के गरीब परिवार से निकलकर कलेक्टर जैसी ऊंची कुर्सी तक पहुंचे। पिता की शराब पीने की आदत ने परिवार को कभी मुसीबतों से उबरने नहीं दिया। मां चूड़ियां बेचकर किसी तरह घर चलाती रही। बचपन में वे भी मां के साथ चूड़ियां बेचते थे। रमेश घोलप ने गरीबी और समस्याओं को बहुत करीब से देखा है।

खुद रमेश के पैर में भी पोलियो होने से वो अलग संकट था। फिर भी उनकी प्रतिभा एक दिन सामने आई और सारी मुसीबतों को पार करके रमेश ने यूपीएससी क्लियर की। इस समय वे झारखंड कैडर में आईएएस हैं। उनमें सहजता और सरलता इतनी है कि सालभर पहले रमेश घोलप की एक फोटो काफी वायरल हुई। यह फोटो उनके गांव में खींची गई थी। एक आईएएस ऑफिसर को सड़क के किनारे ज़मीन पर एक बुज़ुर्ग के बैठकर बात करते और हंसते हुए देखना लोगों को बेहद पसंद आया था। सोशल मीडिया पर भी इसे जनता ने काफी सराहा।

रमेश घोलप महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में स्थित महागांव के रहने वाले हैं। उनके पिता गोरख घोलप की साइकल की छोटी थी, जहां वे साईकल के पंचर बनाते थे। लेकिन, रमेश के पिता को शराब पीने की बुरी आदत थी। इस कारण उनका पूरा परिवार बहुत परेशान रहा। रमेश की मां विमल देवी सड़कों पर चूड़ियां बेचती थीं। रमेश कभी अपनी मां तो कभी पिता के काम में हाथ बंटाते। पोलियो होने के बावजूद रमेश अपनी मां और भाई के साथ चूड़ियां बेचने तक गए। घर की आर्थिक हालात भी खराब थी, इसके बावजूद उनका लक्ष्य सामने था। वे सफलता के उस मुकाम तक पहुंचना चाहते थे, जहां से वे अपने घर और समाज के काम आ सकें।

ज्यादा शराब पीने की वजह से एक दिन उनके पिता की तबियत बिगड़ गई और उन्हें अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। ऐसे हालात में अब घर और परिवार का पूरा भार रमेश की मां पर आ गया। जब उनके पिता का निधन हुआ तब रमेश 12वीं में पढाई कर रहे थे। पिता के निधन की खबर मिलने के बाद रमेश का घर पहुंचना बेहद जरूरी था। चाचा के घर से अपने घर तक का किराया केवल 7 रुपए लगते थे, रमेश विकलांग थे तो उनको केवल 2 रुपए लगते थे। लेकिन हालत ऐसे थे कि उनके पास किराया देने के लिए 2 रुपए भी नहीं थे। पिता के अंतिम संस्कार के लिए मां को अपनी चूड़ी बेचना पड़ी थी।

उनकी शुरूआती शिक्षा गांव के एक स्कूल में हुई। आगे की पढ़ाई के लिए वे चाचा के गांव बरसी चले गए। इतने अभाव के बावजूद 12वीं की बोर्ड परीक्षा में उन्हें 88.50 प्रतिशत अंक हासिल किए। एजुकेशन में डिप्लोमा करने के बाद रमेश गांव के ही एक स्कूल में पढ़ाने लगे। डिप्लोमा के साथ ही उन्होंने बीए की डिग्री भी ली। उनकी मां को सामूहिक ऋण योजना के तहत गाय खरीदने के लिए 18 हजार रुपए का कर्ज मिला था। इसमें से कुछ पैसे बचाकर रमेश ने अपनी पढ़ाई पूरी की।

यूपीएससी की तैयारी करने के लिए रमेश ने 6 महीने के लिए अपनी नौकरी भी छोड़ दी और पूरी मेहनत से तैयारी में लग गए। उन्होंने 2010 में पहली बार यूपीएससी की कोशिश की। लेकिन, इसमें वे सफल नहीं हो सके। इसके बाद उनकी मां ने गांव वालों से कुछ पैसे उधार लेकर रमेश को पढाई के लिए बाहर भेज दिया। पुणे जाने के बाद रमेश ने बिना कोचिंग के यूपीएससी की तैयारी शुरू कर दी। कड़ी मेहनत, लगन और परिश्रम के बाद आखिरकार उन्होंने 2012 में सिविल सर्विस परीक्षा क्रैक कर 287 रैंक हासिल की। विकलांग कोटे के तहत रमेश घोलप आईएएस ऑफिसर बन गए। उन्हें झारखंड कैडर मिला और फ़िलहाल वे एक जिले के कलेक्टर हैं।

... इसलिए आए थे अमित शाह

धर्मेन्द्र पैगवार

देश के गृह मंत्री और भाजपा के मुख्य रणनीतिकार अमित शाह पिछले दिनों भोपाल आए थे। उन्होंने 5 घंटे तक मध्य प्रदेश भाजपा से जुड़े 13 नेताओं की बैठक की। बयान आया कि वह विजय संकल्प यात्रा की तैयारी कराने आए थे। जानने वाले पहले से जानते थे कि पूरी सरकार में मोदी के बाद सबसे अधिक व्यस्त रहने वाले शाह के पास इतना वक्त नहीं है कि वह एक यात्रा की तैयारी कराने के लिए सिर्फ 13 नेताओं से 5 घंटे चर्चा करें। जो जानकारी बैठक से बाहर आई उसके अनुसार अमित शाह ने सभी नेताओं को अपनी स्टाइल में समझा दिया है। सभी से अपना अहंकार छोड़ने और गुटबाजी से दूर रहने के लिए कह दिया गया है। वो यहां के नेताओं से साफ कह गए हैं कि पट्ठेबाजी से दूर रहें टिकट उसी को मिलेगा जो केंद्र के सर्वे में जीतने लायक होगा।

रुझान आने लगे हैं

बात गृह मंत्री अमित शाह की चल रही है तो उनके द्वारा भोपाल में ली गई बैठक के रुझान आने लगे हैं। इस बैठक में मध्यप्रदेश में खुद को शक्ति संपन्न मान रहे नेताओं को संदेश दिया गया था कि वह एक तरफा फैसला नहीं लेंगे। इसी श्रंखला में दो बार प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे और देश के कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर को चुनाव अभियान समिति का संयोजक बना दिया गया है। यह समिति अधिकारों से संपन्न होगी। मतलब साफ है किसी का एकाधिकार नहीं चलेगा। इसी तरह की और समितियां भी बनने वाली है इन्हें भी अधिकार दिए जाएंगे।

सीधी कांड ने बचा दिया विष्णु को

भाजपा में मध्यप्रदेश से लेकर केंद्र तक प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा को हटाने की पटकथा पूरी तरह लिखी जा चुकी थी। लेकिन सीधी में एक आदिवासी के साथ हुई घटना और आरोपी के खिलाफ हुई कार्रवाई के तरीके से विंध्य में ब्राह्मण समाज ने खासी नाराजगी जताई। विंध्य में ब्राह्मण समाज के प्रदर्शन हुए और ब्राह्मण बाहुल्य सीटों पर उम्मीदवार उतारने तक की बात कही गई। ब्राह्मणों के बढ़ते गुस्से को देखते हुए केंद्रीय नेतृत्व ने इस नाजुक दौर में शर्मा को हटाने का फैसला रोक दिया। अब विष्णु दत्त शर्मा प्रदेश अध्यक्ष बने रहेंगे लेकिन अब चुनावी फैसले नई समितियां और सभी नेता मिलकर करेंगे।

सीधी ने कराई प्रदेश सरकार की किरकिरी

सीधी पेशाब कांड को लेकर भाजपा नेता और सरकार से जुड़े लोग कितने ही बयान दें लेकिन इस घटना से मध्य प्रदेश की छवि को धक्का लगा है। सीडी वायरल होने से पहले ही सीधी पुलिस को पूरी घटना की जानकारी थी। इस घटना के मुख्य आरोपी प्रवेश शुक्ला के चाचा ने सीधी के बहरी थाने में 1 जुलाई को प्रवेश के गुम होने, एक सीडी बनने और उसमें पेशाब कांड का जिक्र किया था। पुलिस चाहती तो समय रहते मामले की गंभीरता को देख कर कार्रवाई करती और सीडी को वायरल होने से बचा सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। पुलिस के पास पूरे चार दिन का वक्त था। पुलिस की जानकारी में आने के बाद चार जुलाई को सीडी वायरल हो गई। राज्य पुलिस सेवा से आईपीएस अफसर बने कई अनुभवी अफसर इन दिनों लूप लाइन में बैठे हैं। चुनावी साल में अनुभवी अफसरों को पीएचक्यू में बिठाना और युवाओं को फील्ड पोस्टिंग के फैसले भारी पड़ते दिख रहे हैं।

चंबल में लग सकता है भाजपा को एक और झटका

चुनाव के ठीक पहले भाजपा और कांग्रेसी नेताओं का एक दूसरे के दल में आना जाना शुरू हो गया है। इस बीच भाजपा के एक युवा नेता अपनी पार्टी से बेहद रूठ गए। चंबल के युवा नेता पर पहले उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेता ने पुलिस प्रकरण दर्ज कराए थे। इसके बाद राजधानी के विधायक ने उनके द्वारा लिए गए ठेके को रुकवा दिया। विधायक अपनी पसंद का ठेकेदार चाह रहे थे। बाद मे विधायक जी के केबिन में युवा नेता ने चंबल की स्टाइल में समझा दिया कि वह न तो 30 पर्सेंट कमीशन दे सकते हैं, न किसी धमकी से डरने वाले हैं। ज्यादा दबाव डाला तो भाजपा कार्यालय के सामने धरने पर बैठ जाएंगे। अब उनका अपनी पार्टी से मोह भंग हो गया है। वे जल्दी ही कांग्रेस में जाकर सत्ताधारी दल के बड़े नेताओं के लिए मुश्किलें खड़ी करेंगे।

बुंदेलखंड में कांग्रेस की बी टीम बनी भाजपा

बुंदेलखंड में भाजपा और कांग्रेस के जमीनी कार्यकर्ता बेहद असमंजस में हैं। भाजपा के प्रदेश पदाधिकारी को क्षेत्र का जिम्मा दिया गया है बस जातिगत समीकरणों को साधने के लिए कांग्रेस के कद्दावर नेता से दोस्ती गांठे हुए हैं। वह जब भी दौरे पर आते हैं कांग्रेस के बड़े नेता के यहां जरूर जाते हैं। जिले के प्रभारी का भी यही हाल है। इससे भाजपा कार्यकर्ता दुखी है क्योंकि उन्हें चुनाव मैदान में उन्हीं नेता के खिलाफ, संघर्ष करना है जिन पर पार्टी के नेता मेहरबान हैं। इनमें से एक नेता जी ने अभी भाजपा छोड़कर कांग्रेस ज्वाइन करने की पूरी तैयारी कर ली थी। इसमें सबसे मजेदार बात यह है कि भाजपा के दोनों नेता कांग्रेस के जिस विधायक के जरिए कांग्रेस को साधने में लगे हैं वह विधायक खुद विधायकी बचाने के लिए भाजपा में संभावनाएं तलाश रहे हैं।

रायसेन। मध्य प्रदेश शासन के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कैबिनेट मंत्री डॉक्टर प्रभु राम चौधरी के जन्मदिन के अवसर पर दैनिक सांध्य प्रकाश समाचार पत्र की 52 की वर्षगांठ पर समाचार पत्र का अवलोकन करते हुए। इस अवसर पर जिला पंचायत के अध्यक्ष यशवंत बबलू मीणा भाजपा के वरिष्ठ नेता बृजेश चतुर्वेदी भाजपा नेता मनोज अग्रवाल रायसेन जिले के समाचार पत्र के संवाददाता अशोक सोनी उपस्थित थे।

विश्व में भारत की सफलताओं पर बुरी नजर रखने वालों के दामन पर कालिख

आलोक मेहता

विश्व में शांति, सामाजिक, आर्थिक प्रगति, सामरिक क्षमता और पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है (ताजा प्रमाण प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को फ्रांस और अमेरिका यात्रा के दौरान हुए भव्य स्वागत सत्कार के साथ हुए सामरिक और आर्थिक क्षेत्रों के समझौतों से मिलता है 7 चीन और पाकिस्तान को भारत के बढ़ते महत्व से बैचेनी अवश्य सकती है 7 लेकिन अमेरिका और यूरोप में भी भारत विरोधी कुछ नेताओं और संगठनों द्वारा दुष्प्रचार का प्रयास होता है 7 पहले जहाँ अमेरिका के राष्ट्रपति और संसद में भारत और मोदी की प्रशंसा और तालियों की गूंज हो रही थी , तब भारत विरोधी लाबी के कुछ नेताओं ने मानव अधिकारों के नाम पर आलोचना की कोशिश की 7 फिर अब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को फ्रांस में सर्वोच्च सम्मान तथा ब्रेस्टिल परेड के मुख्य अतिथि बनाया गया और सामरिक समझौता हुआ , तब भारत विरोधी लाबी के कुछ नेताओं ने तथ्यों को जाने समझे बिना यूरोपीय संसद में मणिपुर हिंसा से जुड़ा एक प्रस्ताव पास करवा दिया ।

यूरोपीय संसद में मानव अधिकारों के नाम पर रखे गए इस प्रस्ताव में आरोप लगाया गया कि मणिपुर में अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति असहिष्णुता के चलते ताज़ा हिंसा के हालात पैदा हुए हैं 7 वास्तविक तथ्य जाने समझे बिना इस प्रस्ताव में चिंता ज़ाहिर की गई कि राजनीति से प्रेरित विभाजनकारी नीतियों से इस इलाक़े में हिंदू बहुसंख्यकवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है 7 अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति असहिष्णुता के चलते मणिपुर में हिंसा के हालात पैदा हुए हैं 7 भारत ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई है। विदेश मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि यह भारत के आंतरिक मामलों में दखल है और इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। वास्तविकता भी यह है कि मणिपुर में दो आदिवासी समुदायों में एक अदालती निर्णय से हुई नाराजगी के कारण हिंसा की घटनाएँ हुई है 7 वैसे भी यूरोपीय संसद को किसी भी अन्य देश के आंतरिक मामलों पर बोलने का अधिकार ही नहीं है।

भारत के विरुद्ध जहर उगलने वाले यूरोपीय नेताओं को फ्रांस में हाल में हुई भयावह हिंसा , नस्ली अत्याचार और यूरोपीय संसद के कुछ सांसदों द्वारा लाखों यूरो / डालर लेकर संसद में लाबी के तहत बोलने व्यवहार करने के आरोपों में हुई गिरफ्तारी पर अपने दामन में लगी कालिख पर ध्यान देना चाहिए। अमेरिका , ब्रिटेन की तरह यूरोपीय संसद के नेताओं को मोटी रकम फीस देकर लॉबिस्ट बनने के तरीकों को दुनिया जानती है। चीन , पाकिस्तान ही नहीं कई देश यूरोप के मंच पर अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए ऐसे सांसदों का उपयोग करते हैं। पिछले साल के अंत में एक सांसद पर करीब 15 लाख यूरो लेकर क़तर और मोरक्को के इशारों और स्वार्थों को पूरा करने के प्रमाण सामने आए। पांच लोगों की गिरफ्तारी हुई और सांसद का निलंबन हुआ। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मणिपुर या भारत में मानव अधिकारों की बात उठाने वाले सांसद भारत विरोधी लाबी से फंड लेकर सक्रिय रहे हैं।

भारत तो यूरोपीय देशों और संगठन का सम्मान करता है और 1962 से उसे सहयोग करता रहा है 7 भारत ने सबसे पहले इस संगठन को मान्यता दी थी 7 27 सदस्य देशों का यूरोपीय संघ अपने भारी आर्थिक विकास के अनुरूप वैश्विक स्तर पर समुचित राजनीतिक भूमिका नहीं निभा पा रहा था, परन्तु अब ब्रिटेन के यूरोपियन संघ से अलग हो जाने के बाद संघ ने विश्व के राजनयिक क्षेत्रों में अपनी हलचल कुछ बढ़ाई है और इसका इरादा भविष्य में और सक्रिय भूमिका निभाने की है। वैश्विक मामलों में यूरोपीय संघ कभी प्रभावशाली आवाज नहीं बन सका, इसलिए भारतीय सामरिक हलकों में यूरोपीय संघ के साथ रिश्तों को उतनी अहमियत नहीं दी गई। यूरोपीय संघ भी भारत के प्रति अब तक इसलिए उदासीन रहा कि भारत ने मुक्त व्यापार संधि और निवेश संरक्षण संधि को हरी झंडी नहीं दी थी, अब भारत उसे सहयोग देने लगा है।

यूरोपीय संघ एक आर्थिक और राजनीतिक ब्लॉक के रूप में काम करता है। इनमें से 19 देश यूरो को अपनी आधिकारिक मुद्रा के रूप में उपयोग करते हैं जबकि अन्य 9 यूरोपीय संघ के सदस्य (बुल्गारिया, क्रोएशिया, चेक गणराज्य, डेनमार्क, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया, स्वीडन और ब्रिटेन) यूरो का उपयोग नहीं करते हैं। यूरोपीय आयोग यूरोपीय संघ का एक कार्यकारी निकाय है। यह विधायी प्रक्रियाओं के प्रति उत्तरदायी है। यह विधानों को प्रस्तावित करने, निर्णयों को लागू करने, यूरोपीय संघ की संधियों को बरकरार रखने और यूरोपीय संघ के दिन-प्रतिदिन के कार्यों के प्रबंधन के लिये ज़िम्मेदार है। आयोग 27 सदस्य देशों के साथ एक कैबिनेट सरकार के रूप में कार्य करता है। प्रति सदस्य देश से एक सदस्य आयोग में शामिल होता है। इन सदस्यों का प्रस्ताव सदस्य देशों द्वारा ही दिया जाता है जिसे यूरोपीय संसद द्वारा अंतिम स्वीकृति दी जाती है। 27 सदस्य देशों में से एक को यूरोपीय परिषद द्वारा अध्यक्ष पद हेतु प्रस्तावित और यूरोपीय संसद द्वारा निर्वाचित किया जाता है। संघ के विदेशी मामलों और सुरक्षा नीति के लिये उच्च प्रतिनिधि की नियुक्ति यूरोपीय परिषद द्वारा मतदान द्वारा की जाती है और इस निर्णय के लिये यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष की सहमति आवश्यक होती है। उच्च प्रतिनिधि यूरोपीय संघ के विदेशी मामलों, सुरक्षा एवं रक्षा नीतियों के क्रियान्वयन के लिये ज़िम्मेदार होता है।

भारत को ज्ञान देने वाली संसद का हाल तो यह है कि अगले वर्ष अध्यक्ष पद के लिए हंगरी की बारी आने पर ही कुछ देश दादागिरी करके अभी से विरोध कर रहे हैं। संगठन में बारी बारी से हर देश का अध्यक्ष होता है। जैसे जी -20 समूह के संगठन में होता है। लेकिन रुस यूक्रेन के मुद्दे को लेकर हंगरी को अकारण निशाना बनाया जा रहा है। इस तरह की खींचतानी वाले संगठनों को भारत की तरफ उंगली उठाने का हक़ कतई नहीं है। उन्हें आर्थिक संबंधों और हितों की चिंता करना चाहिए। भारत सबसे बड़ा आर्थिक व्यापार का साथी है। यूरोप की करीब छह हजार कंपनियां भारत में काम कर रही हैं। चीन से बाहर निकल रही पश्चिमी देशों की कंपनियां भारत में अपना धंधा करना चाहती हैं। इसलिए यूरोपीय नेताओं को इन संबंधों को ध्यान में रखकर भारत पर कोई टिप्पणी करनी चाहिए।

यूसीसी: निगाहें कहीं हैं,निशाना कहीं

तनवीर जाफरी

इन दिनों देश में यू सी सी अर्थात यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर बहस जारी है। यह बहस ऐसे समय में छिड़ी है जबकि लगभग 9 महीने बाद देश में आम लोकसभा चुनाव की घोषणा की जानी है। यू सी सी भारतीय जनता पार्टी के उन्हीं तीन प्रमुख चुनावी वादों में से एक है जिन्हें भाजपा ने एक दूरगामी रणनीति के तहत अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में 1996 में पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनते समय ठंडे बस्ते में डाल दिया था। और न्यूनतम सांझा कार्यक्रम के आधार पर एक ग़ैर कांग्रेसी राजग सरकार का गठन किया था। परन्तु 2019 के लोकसभा चुनावों में जैसे ही भारतीय जनता पार्टी अपने पूर्ण बहुमत पर पहुंची और 303 सीटों पर जीत हासिल की तथा भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 353 सीटें जीतीं वैसे ही भाजपा अपने उन मूल मुद्दों को पूरा करने में जुट गयी। इनमें पहला अयोध्या मंदिर निर्माण मुद्दा तो अदालती फ़ैसले के आधार पर निर्णायक नतीजे पर पहुँच गया जबकि 5 अगस्त 2019 को कश्मीर से धारा 370 हटाकर भाजपा ने अपना दूसरा मूल मुद्दा भी हल कर लिया। और अब जबकि विभिन्न राज्यों व केंद्र के चुनाव निकट भविष्य में होने वाले हैं भाजपा ने अपने तीसरे यानी समान नागरिक संहिता के मुद्दे को हवा देनी शुरू कर दी है। वैसे भी समान नागरिक संहिता केंद्र की मौजूदा सत्ताधारी भाजपा के लिए जनसंघ के समय से ही प्राथमिकता वाला एजेंडा रहा है। और भाजपा सत्ता में आने पर इसे लागू करने का वादा करने वाली पहली पार्टी थी और यह मुद्दा उसके 2019 के लोकसभा चुनाव घोषणा पत्र का प्रमुख हिस्सा भी था।

अब यहां पहला प्रश्न यह है कि जिस समान नागरिक संहिता यानी कॉमन सिविल कोड की बात भाजपा दशकों से करती आ रही है उसमें और जिस समान नागरिक संहिता यानी यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड(यू सी सी) की चर्चा इनदिनों छिड़ी है इनमें अंतर क्या है? मोटे तौर पर समान नागरिक संहिता यानी कॉमन सिविल कोड का आशय पूरे देश के सभी नागरिकों के लिये एक जैसा क़ानून लागू करना है। यानी समान नागरिक संहिता का अर्थ होता है भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए एक समान क़ानून होना। चाहे वह किसी भी धर्म,वर्ग,समुदाय या जाति का क्यों न हो। समान नागरिक संहिता लागू होने से सभी धर्मों का एक क़ानून होगा। शादी, तलाक़, गोद लेने और ज़मीन-जायदाद के बंटवारे में सभी धर्मों के लिए एक ही क़ानून लागू होगा। जबकि समान नागरिक संहिता अर्थात यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड का अर्थ देश में रहने वाले किसी भी वर्ग व समुदाय विशेष के लोगों के लिये उनके वर्ग समुदाय के अनुसार एक जैसे क़ानून लागू करना। कहा जा रहा है कि यूसीसी का तात्पर्य देश के सभी नागरिकों के लिए एक समान क़ानून होना है जो धर्म पर आधारित नहीं है। परन्तु इसकी वास्तविक व विस्तृत परिभाषा क्या होगी यह तभी पता चल सकेगा जब इसका पूरा ड्राफ़्ट सामने आयेगा। गोया बावजूद इसके कि इसका ड्राफ़्ट अभी तक तैयार होने की कोई सूचना नहीं है फिर भी उम्मीद है कि इसमें वर्ग के अनुसार एक वर्ग एक समुदाय या एक सम्प्रदाय के लिये अलग अलग क़ानून होने की संभावना है। इसलिये यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड विषय को लेकर छिड़ी इस बहस में शोर और विवाद तो बहुत हैं परन्तु सी सी सी या यू सी सी के अंतर को लेकर अभी भी अनेक भ्रांतियां भी बनी हुई हैं।

राष्ट्रीय विधि आयोग ने देश की संस्थाओं व आम नागरिकों से गत 14 जून को इस विषय पर सुझाव मांगे थे। पिछले दिनों आयोग की ओर से मांगे गए सुझाव की समय-सीमा बढ़ा दी गई है। अब 28 जुलाई तक समान नागरिक संहिता को लेकर भारतीय नागरिक अपने सुझाव आयोग की वेबसाइट पर दे सकेंगे। विधि आयोग की विज्ञप्ति के अनुसार समान नागरिक संहिता विषय पर जनता की ज़बरदस्त प्रतिक्रिया प्राप्त होने के बाद इस तिथि को बढ़ा दिया गया है। इसके लिए समय बढ़ाने को लेकर भी विभिन्न क्षेत्रों से अनुरोध मिल रहे थे। ऐसे में आयोग ने संबंधित हितधारकों से विचार और सुझाव प्राप्त करने के लिए समय सीमा को दो सप्ताह और बढ़ाने का निर्णय लिया है। परन्तु विधि आयोग द्वारा ऑनलाइन मांगे जा रहे इन सुझावों में एक पेंच यह भी है कि देश की आधी से अधिक आबादी को शायद अभी तक यह भी पता नहीं होगा कि यू सी सी है क्या और देश में इस समय यू सी सी नामक किसी विषय को लेकर कोई बहस छिड़ी हुई है। और जिन्हें मालूम भी है वे अपनी रोज़ी रोटी कमाने में इतना व्यस्त हैं कि उन्हें इस बहस में पड़ने या सुझाव देने की फ़ुर्सत ही नहीं। प्रचारित तो यह किया जा रहा है कि यू सी सी मुस्लिम विरोध में लाया जा रहा है। मुस्लिम समुदाय के लोगों में इसे लेकर बेचैनी भी दिखाई दे रही है। परन्तु यह प्रचार भी निराधार है। नगालैंड, मेघालय, पंजाब व तमिलनाडु के लोगों ने और झारखण्ड व मध्य प्रदेश के दर्जनों आदिवासी संगठनों ने विधि आयोग के सामने यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड के विचार को वापस लेने की मांग की है। इन आदिवासी संगठनों का मानना है कि यूसीसी के कारण आदिवासियों की पहचान ख़तरे में पड़ जाएगी। हमारे देश में ही हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में भी कई आदिवासी समाजों में व दक्षिण भारत तथा उत्तर पूर्व की कई जनजातियों में बहुपतित्व प्रथा अभी भी जारी है। हिमाचल के किन्नौर के लोगों का मानना है कि यह प्रथा महाभारत के समय से चली आ रही है। इसके एक ही परिवार के सभी भाइयों द्वारा एक ही महिला से विवाह किया जाता है। इसके पीछे कारण यह बताया जाता है कि वनवास के दौरान जब पांडवों का अज्ञातवास था, तब पांडव द्रौपदी के साथ यहां छिपे हुए थे। इसके पीछे की वजह परस्पर पारिवारिक प्रेम और संपत्ति के बंटवारे से सुरक्षा भी है।

इस तरह के अनेकानेक रूढ़ियाँ व परम्परायें अनेकता में एकता रखने वाले इस भारत महान देश में विभिन्न धर्मों,समुदायों व जातियों में अनेक क्षेत्रों में देखी जा सकती हैं। ऐसे में यू सी सी की चर्चा महज़ एक समुदाय विशेष को विद्वेलित करने का प्रयास है या इसके पीछे सरकार की मंशा कुछ और है इस बात का सही अंदाज़ा तभी लग सकेगा जब इसका ड्राफ़्ट सार्वजनिक होगा। इसके पहले किसी भी समुदाय का आशंकित या विद्वेलित होना हरगिज़ मुनासिब नहीं। संभव है कि इसी मुद्दे के बहाने राजनीति के धुरंधर खिलाड़ियों की निगाहें कहीं हों और निशाना कहीं और? और वे केवल यह बहस छेड़ कर ही समुदाय विशेष के लोगों में उत्तेजना फैलाने मात्र से ही अपना वोट बैंक फ़तेह करना चाह रहे हों?

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —संजय सक्सेना, प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म.प्र.। ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

रायसेन। मध्य प्रदेश शासन के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कैबिनेट मंत्री डॉक्टर प्रभु राम चौधरी के जन्मदिन के अवसर पर दैनिक सांध्य प्रकाश समाचार पत्र की 52 की वर्षगांठ पर समाचार पत्र का अवलोकन करते हुए। इस अवसर पर जिला पंचायत के अध्यक्ष यशवंत बबलू मीणा भाजपा के वरिष्ठ नेता बृजेश चतुर्वेदी भाजपा नेता मनोज अग्रवाल रायसेन जिले के समाचार पत्र के संवाददाता अशोक सोनी उपस्थित थे।

कमिश्नर ने केवलारी आंगनबाड़ी केन्द्र का किया निरीक्षण

छतरपुर। कमिश्नर सागर डॉ वीरेन्द्र सिंह रावत ने शनिवार ने छतरपुर भ्रमण के दौरान बड़ामलहरा के ग्राम केवलारी आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया। इस दौरान डिप्टी कमिश्नर अनिल द्विवेदी, एसडीएम प्रशांत अग्रवाल सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। केन्द्र के निर्माण के लिए लगभग 27 लाख रुपए की राशि आदिवासी वित्त विकास निगम द्वारा दी गई थी तथा निर्माण कार्य पीडब्ल्यूडी द्वारा कराया गया। जो भव्य और विभिन्न सुविधाओं से लेस है। कमिश्नर डॉ रावत ने आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण करते हुए निर्देश दिए कि केन्द्र की बॉउण्ड्रीवाल का निर्माण करें। साथ ही किचिन गार्डन बनाएं तथा मुनगा के पौधे भी रोपें।

बहुद्देशीय कर्मचारी संघ ने मांगों को लेकर मुख्यमंत्री से की मुलाकात

भोपाल। फीमेल हेल्थ एमप्लाई वेलफेयर एसोसिएशन की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमति बेबीराजा बुंदेला एवम प्रदेश कार्यकारिणी ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की, जिसमें बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी संवर्ग की विभिन्न न्यायोचित मांगो के शीघ्र निराकरण हेतु आग्रह किया गया। कई वर्षो से संघ एएनएम संवर्ग संविंदा एएनएम के नियमित पदों पर समायोजन, वेतन विसंगति ,नर्सिंग कैडर में पुनः वापिसी, पदनाम परिवर्तन, ड्रेस कोड में बदलाव , शैक्षणिक योग्यता के आधार पर प्रमोशन एवं विभाग द्वारा जी.एन.एम. प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थियों की पदस्थापना जैसी मांगों को प्रदेश के मुखिया के समक्ष रखता आ रहा है। इस दौरान संघ की सुश्री मनीषा रिछारिया प्रदेश सचिव, श्री मति प्रीति सैनी प्रदेश कोषाध्यक्ष , श्री मति जया श्रीवास्तव जिला अध्यक्ष भोपाल एवम विंदेश चौधरी, कोमल वर्मा सहित बहिनें उपस्थित रहीं।

कल एक बार फिर नगर भ्रमण पर निकलेंगे बाबा महाकाल, 54 साल बाद बन रहा दूसरी सवारी का महासंयोग

उज्जैन। मध्यप्रदेश के उज्जैन में स्थित विश्व प्रसिद्ध बाबा महाकाल के दर्शन करने के लिए रोज हजारों की संख्या में श्रद्धालु उज्जैन नगरी पहुंचते हैं। ऐसे में सावन का महीना चल रहा है, जिसमें बाबा महाकाल की शाही सवारी सोमवार को निकाली जाती है। इस दौरान बाबा महाकाल नगर भ्रमण पर निकलते हैं। बाबा महाकाल की शाही सवारी को देखने के लिए लाखों की संख्या में श्रद्धालु सोमवार के दिन उज्जैन पहुंचते हैं।

बाबा महाकाल की पहली सवारी 10 जुलाई को निकाली गई थी और अब महाकाल की दूसरी शाही सवारी 17 जुलाई को निकाली जाएगी। जानकारी के लिए आपको बता दें कि, प्रत्येक शाही सवारी में बाबा महाकाल की अलग-अलग झलक देखने को मिलती है। ऐसे में दूसरी सवारी में बाबा महाकाल भक्तों को एक साथ दो रूपों में दर्शन देने वाले हैं।

राजाधिराज की सवारी अवंतिकानाथ चांदी की पालकी में चंद्रमौलेश्वर और हाथी पर सवार होकर मनमहेश रूप में निकलेंगे। पुजारियों के अनुसार हमेशा नंदी की सवारी करने वाले शिव शंभु भगवान महाकाल उज्जैन के राजा होने के कारण पालकी व हाथी की सवारी करते हैं। इस बारे में जानकारी देते हुए पुजारियों ने बताया कि नंदी की सवारी करने वाले शिव शंभु भगवान महाकाल उज्जैन के राजा होने के कारण पालकी व हाथी की सवारी करते हैं।

भगवान महाकाल चंद्रमौलेश्वर रूप में चांदी की पालकी और मनमहेश रूप में हाथी पर सवार होकर निकलते हैं। भगवान का हाथी दो पीढ़ियों से उनकी सेवा में है। महाकाल की दूसरी सवारी का महासंयोग बन रहा है। धर्मशास्त्र के जानकारों ने कहा कि 54 साल बाद इस तरह का विशेष संयोग बना है। पर्व विशेष पर देशभर से श्रद्धालु स्नान के लिए उज्जैन पहुंचेंगे।

नर्मदापुरम में पत्रकारिता विश्वविद्यालय की एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

संस्थाओं को समृद्ध करने के लिए विश्वविद्यालय दृढ़ संकल्पित:कुलपति प्रो केजी सुरेश

नर्मदापुरम/भोपाल । माखललाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा संबंध अध्ययन संस्थाओं के लिए नर्मदापुरम में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो (डॉ) केजी सुरेश ने कहा कि संबंध अध्ययन संस्थाओं को समृद्ध करने के लिए विश्वविद्यालय दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने इस अवसर पर दादा माखलनाल चतुर्वेदी जी के छायाचित्र का अनावरण किया और निर्देशित किया कि सभी अध्ययन केंद्र छायाचित्र को अनिवार्य रूप से लगाएं।

कुलपति प्रो सुरेश ने कहा कि दादा माखलनाल जी नर्मदापुरम जिले में ही जन्मे हैं और उनकी पुण्याई से ही दो कमरों से शुरु हुआ विश्वविद्यालय भोपाल के बिशनखेडी में 50 एकड़ भूमि में भव्य परिसर और तीन अन्य परिसरों में तब्दील हो चुका है। नर्मदापुरम संभाग के 60 से अधिक संबंध अध्ययन संस्थाओं के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो सुरेश ने कहा कि आप हमारी पहचान हैं। प्रो सुरेश ने कहा कि विश्वविद्यालय में परीक्षा समय पर होती है और परिणाम भी समय पर आता है। उन्होंने कहा कि हमारी प्रथम प्राथमिकता विश्वविद्यालय के सवा लाख छात्र और संबंध अध्ययन संस्थाए हैं। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. डॉ. अविनाश वाजपेई, निदेशक डॉ. बबीता अग्रवाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजेश पाठक, विशेष अधिकारी डॉ. अरुण कुमार खोबरे, सहायक कुलसचिव विवेक शाक्य एवं एएसआई विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे।

सांसद साध्वी ने मांगी डीईओ से जांच रिपोर्ट

भोपाल। राजधानी भोपाल में चल रहे निजी स्कूलों में कोविड के बाद से ही लगातार शिकायतें मिल रही थी। पैरेंट्स की परेशानियों को देखते हुए माननीय भोपाल सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर जी ने जिला शिक्षा अधिकारी को जांच के लिए निर्देशित किया था। सीबीएसई से संबंध निजी स्कूलों की जांच के लिए 5 सदस्यीय कमेटी गठित की गई थी । कमेटी द्वारा की गई जांच की रिपोर्ट 7 दिन के अंदर माननीय सांसद साध्वी ने तलब की है । जांच प्रतिवेदन के आधार पर यह मामला लोकसभा में उठाया जाएगा । जिससे स्कूलों की मनमानी को खत्म कर आम लोगों को राहत मिल सके।

इन बिंदुओं पर हुई थी जांच एनसीईआरटी सिलेबस के अनुसार शिक्षण व्यवस्था कक्षा में शिक्षक छात्र अनुपात स्कूलों में सुरक्षा और स्वास्थ्य सुविधा की उपलब्धता नियम विरुद्ध ली जाने वाली फीस की जानकारी

मेधावी छात्रों का किया सम्मान,,,

विदिशा। विदिशा की समाजसेवी संस्था भारत भारती जैन संस्कार महिला मंडल द्वारा आज एक साधारण समारोह में विदिशा के मेधावी बच्चे जिन्होंने हृद्‌द्‌ह्र परीक्षा उत्तीर्ण की उनका सम्मान किया गया गया,,,,, भारत भारती संस्कार जैन महिला मंडल की प्रमुख संचालिका श्रीमति नीता सराफ ने बताया कि हर्ष जैन पुत्र श्री राजेन्द्र जैन तारण एवं आदिश जैन पुत्र श्री अतुल जैन खेरुआ का 1100/- रुपये एवं तिलक शाँल श्रीफल के साथ सम्मान किया एवं मंडल उनके उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता है,,,,। इस अवसर पर भारत भारती संस्कार जैन महिला मंडल की सभी सदस्याएं उपस्थित रहीं,,,,

सख़्त किन्तु संवेदनशील प्रशासक थीं निर्मला बुच

भोपाल। राष्ट्रीय सेक्युलर मंच और हम सब के संयुक्त तत्वावधान में प्रसिद्ध समाज सेवी और मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्य सचिव श्रीमती निर्मला बुच के अवदान को स्मरण करने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया।श्रीमती निर्मला बुच का देहावसान 9 जुलाई 2023 को हुआ है। कार्यक्रम में पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न स्वैछिक संगठनों से जुड़े लोग और उपस्थित लोगों ने कहा कि स्वर्गीय श्रीमती बुच हमारे सार्वजनिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण उपस्थिति थीं। वे जेंडर समानता, आर्थिक और सामाजिक न्याय जैसे महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर लम्बी लड़ाई लड़ने वाली योद्धा थीं।

उन्होंने शिक्षा, पर्यावरण और जनोन्मुखी प्रशासन के क्षेत्र में भी अपना सक्रिय योगदान दिया है। स्मरण सभा में वरिष्ठ पत्रकार लज्जाशंकर हरदेनिया, अनीता दास, मदन मोहन उपाध्याय, राजेन्द्र कोठारी, अजय कटारिया, रश्मि सारस्वत, रघुराज सिंह, राकेश दीवान, प्रदीप नन्दी, सुनिल शुक्ल सहित अनेक हितैषी मौजूद थे। अरेरा कॉलोनी स्थित नेशनल सेंटर फ़ॉर ह्यूमन सेटलमेंट्स एंड एनवायरनमेंट के सभागार में

मुख्यमंत्री ने नगर निगम के विनियमित कर्मचारियों को नियमित करने का दिया आश्वासन

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के मान्यता प्राप्त एवं गैर मान्यता प्राप्त कर्मचारी संगठनों की उपस्थिति में प्रदेश के अधिकारी कर्मचारियों को 35 वर्ष की सेवा पूर्ण करने पर स्तरीय समय मान वेतनमान देने की घोषणा की । मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि नगर निगम में कार्यरत विनियमित कर्मचारियों को नियमित किया जाएगा।

आज मुख्यमंत्री निवास में जागरूक अधिकारी कर्मचारी संयुक्त समन्वय कल्याण समिति के प्रदेश संयोजक प्रमोद तिवारी प्रदेश अध्यक्ष उदित भदोरिया प्रदेश अध्यक्ष अरुण द्विवेदी के साथ के साथ सीएम से 70 कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारियों को मुलाकात के लिए बुलाया था। नगर निगम कर्मचारी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अशोक वर्मा जिला अध्यक्ष नवल गोरे प्रेमलता गुप्ता, मंजू श्रीवास्तव,सरोज विलखरे स्थाई कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष शारदा सिंह परिहार ने प्रदेश के अधिकारी कर्मचारियों की 19 सूत्री लंबित मांगों का ज्ञापन सौंपकर मांगों पर चर्चा की प्रदेश के अधिकारी कर्मचारियों की प्रमुख मांगे प्रमुख मांगे पुरानी पेंशन बहाली सेवानिवृत्ति आयु 62 से बढ़ाकर 65 वर्ष की जावे पदोन्नति के अवसर खोलने खोलने ,जिन संवर्ग की प्रदेश में डीपीसी हो चुकी है उनके पदोन्नति आदेश जारी किए जाने अतिथि शिक्षक ,अतिथि विद्वानों को नियमित करने , जॉब दर पर कार्यरत कंप्यूटर ऑपरेटरों का नियमितीकरण एवं संविदा कर्मचारियों को नियमित करने , शिक्षकों को वेतनमान के अनुरूप पदनाम दिया जाए ,लिपिकों की वेतन विसंगति दूर की जावे वन विभाग के अधिकारी कर्मचारियों को पुलिस के समान अधिकार दिए जावे स्थाई कर्मियों को नियमित शासकीय सेवकों के समान संपूर्ण लाभ दिया जावे एवं सातवां वेतनमान दिया जाए केंद्रीय कर्मचारियों के समान गृह भाड़ा भत्ता दिया जावे कैशलैस मेडिकल सुविधा प्रदेश के शासकीय सेवकों को उपलब्ध कराई जाए आदि मांगों का पत्र मुख्यमंत्री को सौंपा ।

पाकिस्तान के नंबर से मैसेज कर ब्लैकमेल कर रहे थे रिकवरी एजेंट

पुलिस का दावा जल्द करेंगे आरोपियों की पहचान

भोपाल। रातीबड़ इलााके में अपने दो मासूम बच्चों को कोल्ड्रिंक में जहर देकर मारने के बाद पत्नी के साथ फांसी लगाकर खुदकुशी करने वाले भूपेन्द्र विश्वकर्मा को जिस नंबर से फोन व मैसेज किया जा रहा था। साथ ही लोन की रिकवरी के लिए मैसेज करने वाले व्यक्ति ने व्हाट्सएप पर लिखा था कि सको बोलो कि लोन पे कर दे, नहीं तो आज इसको मैं नंगा करके सोशल मीडिया पर अपलोड कर दूंगा। अब इस नंबर को लेकर पता किया तो पता चला कि यह नंबर पाकिस्तान का है। ऐसे में अब सुसाइड केस में पाकिस्तानी एंगल भी जुड़ गया है। इन मैसेजों को लेकर भूपेंद्र तनाव में आ गया था।

हालांकि अब मामले की जांच एसआईटी कर रही है और देर रात में पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने और आईटी एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया है। अब देखना यह है कि पुलिस कब तक आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करती है। भोपाल के नीलबड़ स्थित शिव विहार कॉलोनी में रहने वाले भूपेंद्र विश्वकर्मा (38) और पत्नी रितू विश्वकर्मा(34) ने गुरुवार को दोनों बच्चों ऋषिराज (9) और ऋतुराज (3) को कोल्ड्रिंक में जहर पिलाकर मार दिया था। इसके बाद दोनों पति-पत्नी ने के साथ फांसी लगा ली थी। चारों का रीवा जिले के अम्बा गांव में एक साथ अंतिक संस्कार भी कर दिया गया है। जिस स्थान पर माता-पिता का दाह संस्कार किया गया। उसकी के पास दोनों बेटों को दफनाया गया।

एसआईटी ने बैंक से मांगी डिटेल, जल्द होगा खुलासा

एसआईटी ने भूपेंद्र विश्वकर्मा के खातों की डिटेल मांगी है, जिससे पता चल सके कि उसने किन-किन एप से लोन लिया था। हालांकि पुलिस को शुरूआती जांच में एप के संबंध में जानकारी मिल गई है। ये एप ऑनलाइन बिना दस्तावेजों के छोटे लोन देने का काम करता है। इस संबंध में पुलिस आरबीआई को भी पत्र लिखने की तैयारी कर रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद पूरे मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

परिजनों बोले एसआईटी की जांच से संतुष्ट नहीं, सीबीआई जांच हो

मृतक के परिजनों का कहना है कि वह भोपाल पुलिस अफसरों द्वारा बनाई गई एसआईटी जांच से संतुष्ट नहीं है, इसलिए मामले की जांच सीबीआई को सौंपी जाए। हालांकि सरकार की ओर से इस संबंध में किसी भी तरह की जांच के आदेश जारी नहीं किए गए हैं।

सड़क सुरक्षा नेटवर्क ने 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को 50 फीसीदी तक कम करने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड की स्थापना की आवश्यकता को दोहराई

भोपाल हाल ही में श्री नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने भारत में सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों को 2024 तक 50त्न तक कम करने के वैश्विक सड़क सुरक्षा लक्ष्य को प्राप्त करने में अपनी असहायता व्यक्त की। उन्होंने विफलता के प्रमुख कारणों में से एक सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा मानकों को लागू न कर पाने को स्वीकार किया।

सड़क सुरक्षा नेटवर्क (आरएसएन) ने प्रतिक्रिया में माननीय केंद्रीय मंत्री को पत्र लिखकर याद दिलाया कि भारत को उचित उपाय लागू करके वर्तमान दशक के अंत तक 50त्न मृत्यु और गंभीर चोट को कम करने के सड़क सुरक्षा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड की स्थापना, संवेदनशील सड़क उपयोगकर्ताओं (पैदल यात्री, साइकिल चालक और दोपहिया सवार) पर ध्यान केंद्रित करना और उनकी रक्षा करना, जोखिम कारकों (तेज गति, हेलमेट/सीट बेल्ट का उपयोग न करना, शराब पीकर गाड़ी चलाना) के लिए शून्य सहिष्णुता प्रवर्तन नीति और गहन समीक्षा की सख्त आवश्यकता है। आरएसएन ने सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट का हवाला देते हुए यह चिंता भी व्यक्त की कि दुर्घटना से होने वाली मौतों को कम करने की प्रतिबद्धता के विपरीत, यह हर साल बढ़ रही है। वर्ष 2020 में महामारी से प्रेरित लॉकडाउन के कारण सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों में कमी आई, हालांकि 2021 में संख्या में 2019 की तुलना में फिर से उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।

पत्र में मंत्रालय से एक सड़क सुरक्षा कार्य योजना तैयार करने का भी आग्रह किया गया है जिसमे एक वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किया जाये व जिसकी हर छह महीने में समीक्षा की जानी चाहिए। जब तक

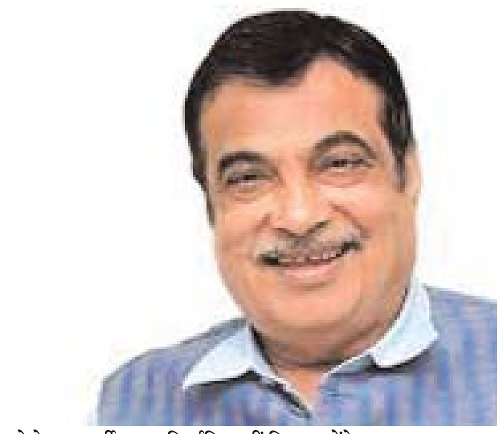

ऐसे मध्यवर्ती उपाय निर्धारित नहीं किए जायेंगे, भारत 2030 तक समग्र लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाएगा।

उपभोक्ता संरक्षण के लिए काम करने वाले अन्य संगठनों ने भी अपनी चिंता व्यक्त की है;

कंज्यूमर वॉयस के सीईओ आशिम सान्याल ने कहा, ÷मुझे 2020 में हुए सड़क सुरक्षा पर हमारे राष्ट्रीय वेबिनार के दौरान गडकरी जी का बयान याद आता है, जहां वह 2024 तक मृत्यु/दुर्घटनाओं में 50 प्रतिशत की कमी लाने के लिए आश्वस्त थे। सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। अध्ययनों से पता चला है कि उचित सड़क सुरक्षा उपायों को अपनाकर लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। हालाँकि, इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, जोखिम कारकों पर ध्यान, डेटा-संचालित विश्लेषण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत को 2030 तक भारतीय सड़कों पर मूल्यवान जीवन को कम करने के लिए ठोस प्रयास करने चाहिए।÷

एनसीएचएसई के महानिदेशक डॉ. प्रदीप नंदी ने कहा, ÷मध्य प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं के कारण मृत्यु दर बहुत अधिक है। एक रिपोर्ट के मुताबिक (2022 में) प्रदेश में 54,432 सड़क हादसों में 13,427 लोगों की जान गई (जिसमे खराब सड़कों के कारण 200 लोगों की जान गई)। सड़क सुरक्षा उपायों पर गंभीरता से ध्यान न देने से स्थिति और खराब होगी। यदि यही स्थिति बनी रही, तो हम 2030 तक लक्ष्य के रूप में 50त्न कटौती हासिल करने के करीब भी नहीं होंगे।%%

सड़क सुरक्षा नेटवर्क के बारे में:

सड़क सुरक्षा नेटवर्क भारत में सुरक्षित सड़क के लिए प्रयासरत सड़क सुरक्षा गैर सरकारी संगठनों/सीएसओ, कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों का एक राष्ट्रीय स्तर का गठबंधन है। संगठनों का गठबंधन भारत में सड़क सुरक्षा में सुधार के लिए मिलकर काम कर रहा है और भारत की सड़कों पर जीवन बचाने के लिए साक्ष्य-आधारित और भागीदारी दृष्टिकोण की वकालत कर रहा है। यह नेटवर्क सड़क सुरक्षा को मजबूत करने वाली नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

ब्याज माफी के लंबित प्रकरण जल्द निपटाएं- कमिश्नर

छतरपुर,। कमिश्नर सागर डॉ वीरेन्द्र सिंह रावत ने शनिवार को जिला पंचायत सभाकक्ष छतरपुर में शासन की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन एवं विभागीय कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में कलेक्टर संदीप जी.आर., डिप्टी कमिश्नर अनिल द्विवेदी, सीईओ जिला पंचातय श्रीमती तपस्या परिहार, एसडीएम एवं विभागों के जिलाधिकारी उपस्थित रहे।

कमिश्नर डॉ रावत ने निर्वाचन संबंधी, ब्याजमाफी, लाड़ली लक्ष्मी एवं लाड़ली बहना योजना, स्वनिधि, पीएम किसान, आयुष्मान, स्कूल चले हम, छात्रवृत्ति पीएम आवास शहरी, मनरेगा और स्वास्थ्य, खनिज, जल निगम आदि के क्रियान्वित कार्यों की समीक्षा की।

कमिश्नर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी विधानसभा निर्वाचन के संबंध में तैयारियां पूर्ण करलें और मतदानों केन्द्रों की व्यवस्थाएं दुरुस्त करें। उन्होंने कहा कि नए मतदाताओं को प्रमुखता से वोटर लिस्ट में जोड़े। एमपीईबी विभाग को स्पष्ट निर्देश दिए कि जिन स्कूलों एवं आंगनवाड़ियों में बिजली कनेक्शन नहीं है। वहां तुरंत कनेक्शन करें और शिकायत का मौका न दें, जिससे मतदान केन्द्रों में विद्युत की उपलब्धता रहे। कमिश्नर सागर ने सहकारिता अधिकारी को समीक्षा करते हुए ब्याज माफी योजना में लंबित कृषकों को अभी तक लाभ नहीं पहुंचाने और राशि का समायोजन नहीं करने पर कड़ी फटकार लगाते हुए एक सप्ताह में सभी बांकी कृषकों को ब्याज माफी योजना का लाभ देने के निर्देश दिए।

पेज 1 का शेष

सांध्यप्रकाश विशेष

पटवारी भर्ती: चयनित अभ्यर्थियों ने कहा—कुछ की गलती की सजा 9 हजार चयनित अभ्यर्थियों को दी जा रही, 17 को करेंगे प्रदर्शन

यादव ने गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा पर भी दोषियों को बचाने का आरोप लगाया है। अरुण यादव ने ट्वीट पर एक पत्र अपलोड़ लिया है। इस पत्र के हवाले से उन्होंने सरकार पर यह आरोप लगाया है। यह पत्र मुख्यमंत्री के अलावा भोपाल और सागर कलेक्टर के अलावा कर्मचारी चयन आयोग के निदेशक को लिखा गया है। जिसमें लिखा गया है कि कर्मचारी चयन मंडल द्वारा आयोजित पटवारी परीक्षा वर्तमान में चल रही है। जेल प्रहरी, वन रक्षक परीक्षा में कुछ नकल माफियाओं द्वारा बहुत ही सुनोयोजित तरीके से नकल कराई जा रही है। इसके लिए कंपनी द्वार आगरा और मथुरा के नकल माफियाओं द्वारा ड्यूटी पर लगाए गए हैं। इसमें भोपाल के सात सेंटर, सागर के दो सेंटर और सतना के एक सेंटर का नाम लिया है। हालांकि अरुण यादव ने जो ट्वीट पर जो पत्र लगाया है, उस पर किसी के हस्ताक्षर नहीं हैं। ना ही शिकातयकर्ता का इस पत्र पर नाम है। यादव ने इस पर लिखा है परीक्षा लेने वाली ब्लैक लिस्टेड कंपनी और सरकार के बीच कौन सा अघोषित एमओयू साइन हुआ था। क्या कारण है कि पूरी सरकार अपने बचाव में लगी हुई है।

इंदौर आरटीओ में मचा घमासान चर्चा का विषय क्यों बन गया?

और जिन लोगों को यहां पर मलाईदार पोस्ट नहीं मिल रही है। वही असंतुष्ट गुट बनाकर इस काम को अंजाम दे रहे हैं। शासन का नियम है कि किसी विभाग में 3 वर्ष से अधिक किसी कर्मचारी और अधिकारी को नहीं रखा जा सकता लेकिन आरटीओ में सालों से कर्मचारी और अधिकारी जमे हुए हैं यदि विभागीय मंत्री और विभाग के सचिव द्वारा यहां पर सफाई अभियान चलाया जाता है तो कई कर्मचारियों के तबादले अन्य जिलों में हो सकते हैं।

कार्यालय भोपाल विकास प्राधिकरण

क्रमांक 777 ज.सं./भो.वि.प्रा./ 22 भोपाल, दिनांक 15/07/2023

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि प्राधिकरण की सरदार वल्लभ भाई पटेल मिसरोद फेस 2, आपसी करार योजना स्थित भूखण्ड क्रं. 124 सेक्टर ए श्री हरीशचन्द्र आहुजा आ. स्व.श्री एस.आर. आहुजा के नाम पर अंकित है। श्री हरीशचंद्र आहुआ का स्वर्गवास दिनांक 10.01.2020 को हो जाने के कारण उनके द्वारा की गई रजिस्ट्रर्ड बिल दिनांक 08.06.2018 के द्वारा उक्त भूखण्ड श्रीमती वंदना आहुजा पत्नी स्व.श्री हरीशचन्द्र आहुजा को दिये जाने का उल्लेख है। श्रीमती वंदना आहुजा द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र, शपथ पत्र, रजिस्ट्रर्ड बिल एवं मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर उक्त भूखण्ड का नाम अद्यतन अपने नाम पर चाहा गया है।

उक्त संबंध में किसी व्यक्ति/उत्तराधिकारी को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशित होने की दिनांक से सात दिवस के अन्दर लिखित एवं साक्ष्य/दस्तावेजो के साथ के साथ इस कार्यालय में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष अपनी दावा/आपत्ति प्रस्तुत करें। उक्त समयावधि के पश्चात कोई भी दावा/आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी, तथा प्राधिकरण नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

राजस्व अधिकारी

नेहा दास से मिलिए: इस प्राइम डे पर अमेज़न प्राइम मेंबर्स को दे रहीं ढेरों खुशियाँ

मुंबई, एजेंसी। अमेज़न पर मनाया जाने वाला प्राइम डे का जश्न सिर्फ प्राइम मेंबर्स के लिए ही नहीं, बल्कि तमाम अमेज़नियंस के लिए भी ढेर सारी खुशियाँ लेकर आता है। ये अमेज़नियंस वही लोग हैं, जो देश भर में ग्राहकों को खुश करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। अमेज़न इंडिया में साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरी मैनेजर नेहा दास से मिलिए, जो द्बड्ड5श्ठ्ठ.द्बठ्ठ पर साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरीज़ में प्रोडक्ट्स की खरीदी के इच्छुक ग्राहकों को एक सुखद अनुभव देना सुनिश्चित करती हैं। नेहा दास वर्ष 2021 में अमेज़न में एक बिज़नेस डेवलपमेंट मैनेजर के रूप में शामिल हुईं। शुरुआत में उन्होंने अमेज़न ग्लोबल सेलिंग के माध्यम से भारत के ब्रांड्स और विक्रेताओं को संयुक्त अरब अमीरात और केएसए सहित भारत के बाहर अन्य बाजारों में प्रोडक्ट्स को निर्यात करने में सक्षम बनाया। इसका परिणाम यह रहा कि उन्हें वैश्विक ग्राहक आधार में मूल्यवान अंतर्दृष्टि हासिल हुई और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से ताल्लुक रखने वाले ग्राहकों को खुशी प्रदान करने में उनका कौशल भी बखूबी निखर सका। वर्तमान में अपनी भूमिका के रूप में, वे भारत में साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरीज़ का नेतृत्व करती हैं, और इन गतिविधियों के प्रति ग्राहकों में खुशी और उत्साह का संचार करने के लिए लगातार नए तरीके खोजती हैं। प्राइम डे के लिए अपने उत्साह को दर्शाते हुए, नेहा दास ने कहा, प्राइम डे हमारे प्राइम मेंबर्स के लिए एक शानदार अवसर है, जो न सिर्फ उन्हें बेहतरीन डील्स, नए लॉन्च और ब्लॉकबस्टर एंटरटेनमेंट के साथ सर्विसेस प्रदान करता है, बल्कि उनके खरीदारी अनुभव को भी श्रेष्ठतम बनाता है। खोज के इस शानदार समय में नई संभावनाओं को अपनाते हुए, प्राइम मेंबर्स कई सकारात्मक अनुभवों को प्राप्त कर सकते हैं। ब्रांड्स के नए लॉन्च लाना, उनकी इस यात्रा का हिस्सा बनना और इससे हमारे प्राइम मेंबर्स को मिलने वाली खुशी का गवाह बनना हमें दोगुनी खुशियाँ दे जाता है। नेहा दास को अमेज़न इंडिया में समान विचारधारा वाले सहकर्मियों के साथ काम करने में बेहद संतुष्टि मिलती है, जो ग्राहकों के लिए समान रूप से अपना सर्वश्रेष्ठ देने का लक्ष्य रखते हैं। वे कहती हैं, अमेज़न का जीवंत वर्क कल्चर, अद्वितीय दृष्टिकोण और विचारों को महत्व देता है। यह टीम को एक सशक्त वातावरण प्रदान करता है और साथ ही उन्हें सीमाओं को पार करके आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। अमेज़न में, हम नेतृत्व सिद्धांतों पर चलते हैं, जिनमें से मैं कार्रवाई के लिए तत्परता और स्वामित्व में दृढ़ता से विश्वास करती हूँ। तेजी से निर्णय लेना, विशेष रूप से दो-तरफा दरवाजे की परिस्थितियों में; और शुरू से अंत तक किसी व्यक्ति विशेष के चार्टर का पूर्ण स्वामित्व लेना मुझे इनोवेशन के साथ ही सर्वोत्तम प्राइम मेंबर अनुभव प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

अवेस्थाजेन लिमिटेड ने पेश किया टीस्टार बायोएक्टिव गमिज

भोपाल । अवेस्थाजेन लिमिटेड की इकाई अवेस्था गुड अर्थ फूड ने शुगर और कैलोरी मैनेजमेंट के लिए एक उत्पाद टीस्टार बायोएक्टिव गमिज पेश किया है। इससे भोजन के बाद ब्लड ग्लूकोज का स्तर 10एमजी/डीएल तक कम किया जा सकता है। इसमें सभी प्राकृतिक तत्वों को शामिल किया गया है जो कि ब्लड शुगर स्पाइक्स का मैनेज करता है और आगे एक बेहतर इंसुलिन प्रतिक्रिया को मैनेज करने में मदद करता है। टीस्टार को एक भारतीय औषधीय पौधे से विकसित किया जाता है, जिसका उपयोग आम तौर पर फूड मैट्रिक्स के एक हिस्से के तौर पर किया जाता है। इसका उपयोग पारम्परिक चिकित्सा में एक शक्तिशाली शुगर और कैलोरी मॉड्यूलेटर के रूप में किया जाता है और यह स्वस्थ बॉडी मास को मैनेज करता है। सबसे अच्छे परिणामों के लिए इसे नाश्ते और रात के खाने से पहले दो गमिज लेने की सिफारिश की जाती है। टीस्टार पेट में और हाइड्रेशन पर आंत में एक कोलाइडल प्रकार का सस्पेंशन बनाता है, और इस प्रकार गठित लेष्म भोजन के गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल पारगमन के साथ-साथ इसके पाचन को धीमा कर देता है। इस प्रकार, यह लम्बे समय तक पचने वाले भो जन से कम कैलोरी की उपज और बदले में, तृप्ति की अनुभूति प्रदान करता है। टीस्टार का निर्माण एक अत्याधुनिक निर्माण संयंत्र और आर एण्ड डी सुविधा में किया जाता है जो कि पर्यावरण के अनुकूल और केवल इथेनॉल और पानी का उपयोग करके एक्सटर्सन को सुरक्षित प्रक्रिया से बनाया जाता है, जिसके लिए किसी भी कठोर रसायन या अर्क के वाष्पीकरण की आवश्यकता नहीं होती है। उत्पाद अवेस्थाजेन मालिकाना फिंगरप्रिंटिंग तकनीक, मेटाग्रिड का उपयोग करके एक बहुत ही कठोर गुणवत्ता स्थिरता बनाए रखता है।कुल मिला कर टीस्टार एक बहुत ही सुरक्षित और शक्तिशाली कैलोरी मॉड्यूलेटर है और इसका उपयोग स्वस्थ बॉडी मास मैनेजमेंट करने के लिए किया जा सकता है।

जॉइंट रिप्लेसमेंट में नई टेक्नोलॉजी पर सेमिनार

भोपाल। भोपाल के एमपी नगर में स्थित होटल रेसिडेंसी में शुक्रवार 14 जुलाई 2023 को मेडिकेयर हॉस्पिटल, इंदौर के जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. हेमंत मंडोवरा द्वारा फिजियोथेरेपिस्ट्स के लिए 'जॉइंट रिप्लेसमेंट में नई टेक्नोलॉजी पर' एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। जॉइंट रिप्लेसमेंट से जुड़े नई टेक्नोलॉजी के बारे में फिजियोथेरेपिस्ट्स से डॉ. हेमंत मंडोवरा अपने इस सेशन में जॉइंट रिप्लेसमेंट में उन्नत तकनीक विधियों, नए इम्प्लांट्स के प्रयोग के बारे में अपने अनुभव और जानकारियाँ साझा किए। डॉ. हेमंत मंडोवरा ने बताया यह विशेष आयोजन जॉइंट रिप्लेसमेंट के क्षेत्र में नई टेक्नोलॉजी के बारे में नवीनतम जानकारी देने का एक मौक़ा था, इस इंटरैक्टिव सेशन में फिजियोथेरेपिस्ट्स से प्री ऑपरेशन और पोस्ट ऑपरेशन अनुभवों को साझा किया। साथ ही मिनिमल इनवेसिव सर्जरी, पार्शियल नी रिप्लेसमेंट, अस्पताल से जल्दी छुट्टी, रिप्लेसमेंट के बाद सामान्य स्थिति में लौटना, कंधे के जोड़ बदलने वाले मरीजों और उनके स्वास्थ्य से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक बातचीत हुई।

जम्मू-कश्मीर की लुप्त होती नमदा आर्ट को पुनर्जीवित कर रहा है स्किल इंडिया प्रोजेक्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के स्किल इंडिया के पायलट प्रोजेक्ट के तहत कश्मीर के नमदा क्राफ्ट को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिसमें राज्य के छह जिलों के लगभग 2,200 उम्मीदवार प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमशीलता तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी राज्य मंत्री, श्री राजीव चंद्रशेखर ने आज यूनाइटेड किंगडम (यूके) में एक्सपोर्ट के लिए नमदा क्राफ्ट के उत्पादों के पहले बैच को हरी झंडी दिखाई।

यह प्रोजेक्ट कौशल विकास के क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल का एक बड़ा उदाहरण स्थापित करता है, क्योंकि इसे स्थानीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है। इस पहल के तहत, लगभग 2,200 उम्मीदवारों को नमदा क्राफ्ट में प्रशिक्षित किया गया है, जो इस पारंपरिक क्राफ्ट को संरक्षित करने और स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस प्रोजेक्ट के द्वारा कश्मीर के छह जिलों, श्रीनगर, बारामूला, गांदरबल, बांदीपोरा, बडगाम और अनंतनाग में लोगों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत के युवाओं की

स्किलिंग, रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दृढ़ बनी हुई है। मीर हैंडीक्राफ्ट और श्रीनगर कारपेट ट्रेनिंग और मार्केट सेन्टर जैसे स्थानीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से जम्मू-कश्मीर में इस पायलट प्रोजेक्ट का सफल कार्यान्वयन, कौशल विकास को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास के लिए निवेश आकर्षित करने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी की ताकत का जीवंत उदाहरण है। इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए, कौशल विकास और उद्यमशीलता और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के राज्य मंत्री, श्री राजीव चन्द्रशेखर ने कहा, हमने 2021 में नमदा परियोजना शुरू की थी, और अब इसके परिणाम को देखना बेहद संतोषजनक है जो हमारे माननीय प्रधानमंत्री के नया भारत, नए अवसर, नई समृद्धि के विज़न के साथ पूरी तरह से मेल खाता है और जो इस बात पर जोर देता है कि कौशल का मतलब नए अवसर और नई समृद्धि पैदा करना है। कारीगरों और हैन्डीक्राफ्ट्स सेक्टर स्किल काउंसिल द्वारा किए गए इस बड़े प्रयास के एक छोटे से हिस्से के रूप में, मैं आप सभी को इस कला की जबरदस्त सफलता और समृद्धि की शुभकामना देता हूं, और इस मील के पत्थर को हासिल करना हमारे लिए गौरव का पल है।

उन्होंने कहा कि नमदा प्रोजेक्ट पीएम श्री नरेंद्र मोदी के स्किल इंडिया के विज़न के बेहद संतोषजनक और निर्णायक परिणाम का उदाहरण है, जो लोगों को सशक्त बनाने और अवसर पैदा करने के बारे में है। श्री राजीव चंद्रशेखर ने 2021 में जम्मू और कश्मीर का दौरा किया था और अपनी यात्रा के बाद, उन्होंने क्षेत्र में लुप्त हो रहे पारंपरिक क्राफ्ट के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए एक प्रोजेक्ट आयोजित करने की आवश्यकता व्यक्त की क्योंकि हैंडीक्राफ्ट सेक्टर उनकी अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख योगदानकर्ता और रोजगार जनरेटर है।

नमदा क्राफ्ट सामान्य बुनाई प्रक्रिया के बजाय फेल्टिंग तकनीक के माध्यम से भेड़ के ऊन से बना गलीचा है। कच्चे माल की कम उपलब्धता, कुशल जनशक्ति और मार्केटिंग तकनीकों की कमी के कारण, 1998 और 2008 के बीच इस क्राफ्ट के एक्सपोर्ट में लगभग 100 प्रतिशत की गिरावट आई है। इसलिए, पीएमकेवीवाई के तहत इस स्पेशल प्रोजेक्ट के माध्यम से, कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) ने इस लुप्तप्राय क्राफ्ट को संरक्षित करने के लिए शार्टटर्म ट्रेनिंग पाठ्यक्रम तैयार किया है। प्रोजेक्ट को प्रशिक्षण के 3 साइकिल में 25 बैचों में लागू किया गया है। प्रत्येक ट्रेनिंग प्रोग्राम लगभग साढ़े तीन महीने का था, जिसके परिणामस्वरूप साइकिल लगभग 14-16 महीनों में पूरा हो गया।

जल्द ही भारत से निर्यात होंगे शाओमी के फोन, पहले यूएई में भेजने की है योजना

नई दिल्ली, एजेंसी। अब शाओमी के भारत में बने स्मार्टफोन की बिक्री पश्चिम एशिया के देशों में भी हो सकती है। स्मार्टफोन बनाने वाली चीन की दिग्गज कंपनी शाओमी मेड इन इंडिया यानी यहां भारत में बने स्मार्टफोन को पश्चिमी एशिया के देशों में निर्यात करने की तैयारी में है। यह काम सितंबर तिमाही के आखिरी यानी अगले ढाई महीने के भीतर हो सकता है। इसके लिए कंपनी कांट्रैक्ट मैनुफैक्चरर डिक्सन टेक और अन्य कंपनियों के साथ स्थानीय स्तर पर फोन बनाने के लिए बातचीत कर रही है। इसका खुलासा एक मीडिया रिपोर्ट से हुआ है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक शाओमी की योजना अपने हैंडसेट में भारत में बने पार्ट्स का इस्तेमाल दोगुना कर 70 फीसदी तक ले जाने की है। हालांकि इसमें सेमीकंडक्टर यानी चिप नहीं शामिल है। अभी ताइवान की कंपनी फॉक्सकॉन और चीन की डीबीजी और बीवाईडी इसके फोन भारत में असेंबल करती हैं। हालांकि मनीकंट्रोल इसकी सत्यता की पुष्टि नहीं कर सकता है।

मार्केटिंग स्ट्रैटजी भी बदल रही शाओमी

शाओमी अब यहां अपनी मार्केटिंग रणनीति में भी बदलाव कर रही है। इसकी योजना हैंडसेट मॉडलों की संख्या को घटाने की है। इसके अलावा अब यह 10,000 रुपए से 15,000 रुपए के बीच की कीमत वाले

स्मार्टफोन पर ध्यान बढ़ाएगी और इस प्राइस रेंज में नए प्रोडक्ट लेकर आएगी। यह अपनी ऑफलाइन मौजूदगी भी बढ़ाना चाहती है। अभी ऑफलाइन और ऑनलाइन बिक्री की हिस्सेदारी 50-50 फीसदी है और कंपनी ऑफलाइन बिक्री को 60 फीसदी तक पहुंचाना चाहती है।

अब निर्यात को लेकर बात करें तो कंपनी ने यूएई को मोबाइल फोन निर्यात करने की योजना के बारे में सरकार के साथ चर्चा की। इसके तहत पहले एंट्री लेवल और मिड-रेंज को फोन का निर्यात यूएई में किया जाएगा और फिर बाकी देशों में भी निर्यात होगा। शाओमी 100 से अधिक देशों में अपने स्मार्टफोन की बिक्री करती है और पश्चिमी एशिया इसके लिए अहम बाजार है।

निर्यात को लेकर मिनिस्ट्री लगातार दे रही जोर

चीन की मोबाइल कंपनियों को मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी अपने प्रोडक्ट्स यहां से बाहर भेजने को कहती रही है। मिनिस्ट्री ने चाइनीज कंपनियों के साथ कई बैठकों में जोर देकर कहा कि वे प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव के तहत आने वाली यहां की इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग सर्विस कंपनियों के साथ साझेदारी करें और जो प्रोडक्ट्स तैयार करें, उनका निर्यात करें।मिनिस्ट्री ने इन बैठकों में चाइनीज कंपनियों को यहीं पर अपना प्रोडक्शन बढ़ाने को कहा है ताकि स्थानीय सप्लाई चेन डेवलप हो सके। मई में शाओमी ने मई में नोएडा की कांट्रैक्ट मैनुफैक्चरर ओप्टिमस इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ ब्लूटूथ नेकबैंड इयरफोन बनाने के लिए कांट्रैक्ट किया था।

एसओटीसी ट्रैवल ने अपनी वेबसाइट को तीन क्षेत्रीय भाषाओं में लॉन्च

मुंबई। एसओटीसी ट्रैवल विभिन्न चैनलों के माध्यम से ट्रैवल एवं टूरिज्म सेवाओं को प्रस्तावित करने वाली अग्रणी कंपनी है, जिसने क्षेत्रीय भारत, यानी कि भारत के बहुत अधिक संभावना वाले बाजारों को ध्यान में रखते हुए एक नई पहल की शुरुआत की है। कंपनी ने देश के अलग-अलग भाषा वाले क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक की समझ रखने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से तीन क्षेत्रीय भाषाओं - हिंदी, गुजराती और तमिल में अपनी वेबसाइट लॉन्च की है। कंपनी ने ग्राहकों को उनकी पसंद की भाषा में अपने सभी प्रोडक्ट्स औरसेवाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाए हैं, जिससे कंपनी को क्षेत्रीय स्तर पर लोगोंसे जुड़ाव में काफी मदद मिलेगी।कंपनी द्वारा हाल ही में जारी की गई 'इंडिया हॉलिडे रिपोर्ट मई 2023' से यह पता चलता है कि, भारत केटियर 2-3 श्रेणी के बाज़ारों के 60 प्रशित ग्राहक ट्रैवल करना चाहते हैं। लोगों के मन में ट्रैवल करने की चाहत,खर्च करने के लिए अतिरिक्त आमदनी, तथा क्षेत्रीय भारत के लोगों के बीच हॉलिडे की लगातार बढ़ रहीमहत्ताने साथ मिलकर एसओटीसी के हॉलिडे बिजनेस में 35त्न का शानदार योगदान दिया है। इसी वजह से, देश के ये सभी बाजार कंपनी के विकास को आगे बढ़ाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण बन गए हैं। इसलिए, एसओटीसी की वेबसाइट को तीन प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में लॉन्च करने का उद्देश्य तेजी से विकसित हो रहे, इस बाजार में अपनी पैठ बनाना है। एसओटीसी ट्रैवल ने क्षेत्रीय भारत के अपने ग्राहकों की खास पसंद के आधार पर हॉलिडे पैकेज की एक बड़ी श्रेणीतैयार की है, जो इस तरह की जरूरतों को पूरा करती है। मिसाल के तौर पर, गुजराती पर्यटक स्थानीय भोजन की जरूरत को सबसे ज्यादा प्राथमिकता देते हैं, और इस बात को ध्यान में रखकर कंपनी ने ;गुर्जर विश्वदर्शन हॉलिडेज लॉन्च किया है, जिसके तहत यात्रियों को यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया और इसी तरह के सभी प्रमुख स्थानों पर शाकाहारी और गुजराती भोजन की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। एसओटीसी ट्रैवल ने भारत में पहली बार ग्रुप हॉलिडेज की शुरुआत की थी, और यह कंपनी भारत में पर्यटन क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों को तेजी से विकसित करने में सबसे आगे रही है। एसओटीसी ट्रैवल 70 से अधिक वर्षों की

विरासत को संजोकर रखने वाला एक घरेलू और भरोसेमंद ट्रैवल ब्रांड है।

अभी और रुलाएगा टमाटर, 300 रुपये तक जा सकते हैं भाव, 2 महीने तक राहत की गुंजाइश कम

नई दिल्ली, एजेंसी। आसमान छूती कीमतों ने रसोई से टमाटर को गायब कर दिया है। कई जगहों पर 200 रुपये किलो तक टमाटर बिक रहे हैं। लोगों को राहत देने के लिए सरकार ने आधी कीमत पर टमाटर बेचना शुरू किया है। लेकिन लोगों को जल्द राहत मिलने के आसार नहीं हैं। एक्सपर्ट्स की मानें तो आने वाले दिनों में टमाटर के भाव 300 रुपये प्रति किलो तक जा सकते हैं। मनी कंट्रोल की रिपोर्ट के मुताबिक, नेशनल कमोडिटी मैनेजमेंट सर्विसेज लिमिटेड के सीईओ संजय गुप्ता का कहना है कि टमाटर के दाम अभी और बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले 2 महीनों तक ग्राहकों को राहत नहीं मिलने वाली है।

देश में विभिन्न जगहों पर आई भारी बारिश के चलते टमाटर की कीमतों में तेजी आई है। टमाटर की कीमतें 300 फीसदी तक बढ़ चुकी हैं। लगातार हो रही बारिश के चलते नई फसल भी नहीं लग पा रही है। ऐसे में जल्द ही कीमतों के नीचे आने की गुंजाइश कम है।

सरकार बेच रही सस्ते टमाटर

सरकार सस्ती कीमतों पर टमाटर बेच रही है। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ ने शुक्रवार से दिल्ली-एनसीआर में 90 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर टमाटर बेचना शुरू किया है। ये टमाटर मोबाइल वैन के जरिए बेचे जा रहे हैं। नोएडा में रजनीगंधा चौक स्थित ह्रष्टष्ट्स्न ऑफिस में, ग्रेटर नोएडा और अन्य स्थानों पर मोबाइल वैन के जरिये से टमाटर बेचे जा रहे हैं।

यहां होता है सबसे अधिक टमाटर

टमाटर का 91 फीसदी उत्पादन महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और हरियाणा में होता है। महाराष्ट्र और कर्नाटक में इस बार वायरस के चलते टमाटर की फसलें बुरी तरह नष्ट हो गई।

भारत और चीन के बीच व्यापार में आई गिरावट, वर्षों बाद हुआ यह कारनामा

नई दिल्ली, एजेंसी। सीमा पर तनाव के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में भारत-चीन के बीच व्यापार काफी बढ़ा है। लेकिन अब वर्षों बाद इंडिया-चाइना ट्रेड में गिरावट के संकेत देखे जा सकते हैं। इस साल की पहली छमाही में भारत और चीन के बीच व्यापार में 0.9 फीसदी की गिरावट आई है। हालांकि, ऐसा तब हुआ है, जब चीन के कुल विदेशी व्यापार में करीब 5 फीसदी की गिरावट आई है। कोरोना महामारी के प्रकोप से रिकवर होने में चीनी इकॉनमी को स्ट्रगल करना पड़ा है। यही कारण था कि उसका विदेशी व्यापार गिरा है।

इस साल की पहली छमाही में भारत को चीन का निर्यात 56.53 अरब डॉलर का रहा। यह एक साल पहले के 57.51 अरब डॉलर से 0.9 फीसदी कम है। गुरुवार को चीनी कस्टम्स द्वारा जारी आंकड़ों से यह जानकार मिली है। वहीं, चीन को भारत का निर्यात इस अवधि में कुल 9.49 अरब डॉलर रहा। यह एक साल पहले 9.57 अरब डॉलर रहा था। इस तरह साल 2023 की पहली छमाही में व्यापार घाटा एक साल पहले के 67.08 अरब डॉलर से घटकर 47.04 अरब डॉलर रह गया। पिछला साल भारत-चीन व्यापार के लिए बंपर ईयर रहा था। यह पिछले साल 135.98 अरब डॉलर के ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया था। साल 2022 में कुल भारत-चीन व्यापार 8.4 फीसदी

की बढ़त के साथ एक साल पहले के 125 अरब के आंकड़े को पार कर गया था। द्विपक्षीय संबंधों में उतार-चढ़ाव के बावजूद चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा पहली बार 100 अरब डॉलर के पार पहुंच गया था। साल 2022 में भारत के लिए व्यापार घाटा 101.02 अरब डॉलर रहा। यह 2021 में 69.38 अरब डॉलर था।

वहीं, इस साल की पहली छमाही में भारत-चीन व्यापार में वर्षों बाद गिरावट देखने को मिली है। क्योंकि इस दौरान आयात और निर्यात सहित चीन का कुल व्यापार एक साल पहले की तुलना में 5 फीसदी गिर गया था। निर्यात 3.2 फीसदी गिरा और आयात में 6.7 फीसदी की गिरावट आई।

कृषि का जीडीपी में अंशदान बढ़ाने में एफपीओ की अहम भूमिका

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का योगदान विपणन गतिविधियों को मजबूती देकर बढ़ाया जा सकता है और इसमें किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) की अहम भूमिका होगी। शाह ने यहां एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आधुनिक प्रौद्योगिकी और विपणन पद्धतियों को अपनाने से कृषि एक लाभदायक उद्यम बन सकता है।

इस लक्ष्य को हासिल करने में प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (पैक्स) और एफपीओ

मददगार बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि पैक्स सहकारी समितियों की तरफ से गठित एफपीओ व्यक्तियों, कंपनियों एवं साझेदारियों में बने एफपीओ की तुलना में किसानों को लाभ पहुंचाने में अधिक सक्षम हैं। शाह ने पहले से सक्रिय एफपीओ को पैक्स समितियों के साथ हाइब्रिड मॉडल में काम करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि पहले से गठित करीब 11,770 एफपीओ सहकारी समिति के सदस्यों को सेवाएं देने का करार कर खुद को पैक्स समितियों से जोड़ सकती हैं। ऐसा होने पर 65,000 से अधिक पैक्स समितियां एफपीओ के तौर पर काम कर सकती हैं। सहकारिता मंत्री ने कहा कि कृषि, पशुपालन एवं मत्स्यपालन क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और इन क्षेत्रों में वृद्धि होने से न केवल देश की जीडीपी बढ़ेगी बल्कि नए रोजगार अवसर भी सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र देश की जीडीपी में 17.5-18 प्रतिशत का योगदान दे रहे हैं जो अन्य क्षेत्रों से अधिक है। लेकिन सेवा क्षेत्रों में कार्यरत लोगों की तुलना में किसानों की हालत उतनी अच्छी नहीं है। शाह ने कहा, किसानों के आजीविका स्तर को सुधारकर सेवा क्षेत्र में कार्यरत लोगों की तरह बनाने के लिए हमें एफपीओ को स्वीकार करने की जरूरत है। सरकार ने वर्ष 2027-28 तक कृषि मंत्रालय के तहत 10,000 नए एफपीओ गठित करने का लक्ष्य रखा है। एफपीओ छोटे किसानों को खेती में बीज से लेकर प्रसंस्करण एवं विपणन जैसे सभी क्षेत्रों में मदद मुहैया कराते हैं।

भोपाल में स्मार्ट मीटरिंग प्रोजेक्ट के लिए चीन की कंपनी को चुना गया

भोपाल। संवेदनशील परियोजना होने के बावजूद एमपी डिस्कॉम चीनी कंपनी को लगभग 900 करोड़ रुपये का महत्वपूर्ण ऑर्डर देने जा रही है। भोपाल में रहने वाले 975000 परिवारों का डाटा/जानकारी चीनी कंपनी के पास पहुंच जाएगी। मध्य प्रदेश की सरकारी उपक्रम मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड ने स्मार्ट मीटरिंग के लिए एडवांस्ड मीटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर सर्विस प्रोवाइडर (एएमआईएसपी) के चयन और नियुक्ति के लिए 27 नवंबर 2022 को निविदाएं आमंत्रित करने के लिए एक नोटिस जारी किया था, जो कि डिजाइन बिल्ड फाइनेंस ओन ऑपरेट ट्रांसफर मॉडल पर आधारित था। बोली लगाने वालों में इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड 897 करोड़ रुपये की बोली के साथ एल1 विक्रेता के रूप में उभरा। अप्रावा एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड (जिसे चाइना लाइट एंड पावर इंडिया लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) ने 936 करोड़ रुपये की बोली के साथ एल2 विक्रेता का स्थान हासिल किया और जीनस पावर इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को 949 करोड़ रुपये पर एल3 विक्रेता के रूप में सूचीबद्ध किया गया। इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 31 मार्च 2023 को लेटर ऑफ एक्सेप्टेंस (एलओए) प्रदान किया गया था। मामूली देरी और अन्य प्रक्रियात्मक मुद्दों के कारण, डिस्कॉम ने इंडिया पावर को टर्मिनेशन लेटर जारी कर दिया। परिणामस्वरूप, ऑर्डर अब रु2 विक्रेता को ट्रांसफर किया जा रहा है, जिससे चिंताएं बढ़ गई हैं। अप्रावा एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड चीन स्थित कंपनी द्वारा प्रवर्तित है, जिसे चाइना लाइट एंड पावर कंपनी के नाम से जाना जाता है, जिसका मुख्यालय हांगकांग में है और यह हांगकांग के स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध है।किन ग्राहकों को झटका बैंक के इस फैसले का असर फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट पर लोन लेने वाले ग्राहकों पर होगा न कि फिक्स्ड इंटरेस्टर रेट पर। एमएसीएलआर बढ़ने के बाद इएमआइ रीसेट डेट पर ही बढ़ेगी।

मोटर साइकल से कर रहे थे सागौन 7 की तस्करी , वन विभाग टीम ने पकड़ा

छिंदवाड़ा । मोटर साइकल से सागौन की तस्करी करते हुए शुक्रवार रात को वनविभाग की टीम ने एक तस्कर को पकड़ा । इसमें एक तस्कर वन विभाग की टीम को देखकर फरार हो गया । अधिकारियों ने एक तस्कर को अपनी गिरफ्त में लेते हुए , वन अधिनियम के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया है । मामला मोहखेड़ के महलपुर का है । मोहखेड़ वनक्षेत्र के अधिकारी शुक्रवार रात को रात्रि गश्त कर रहे थे । इस दौरान एक मोटर साईकल में दो तस्कर सागौन की बड़ी - बड़ी बलियां भरकर ले . जा रहे थे । वनविभाग की टीम ने इन्हें रोकने की कोशिश की तो एक आरोपी मौके से फरार हो गया । वनविभाग की टीम मे दयालाल निवासी फ्लासपानी को पकड़कर प्रकरण पंजीबद्ध किया है । वहीं मोटर साईकल व सागौन जब्त की है । इस कार्रवाई में आरओ हेमंत भार्गव , वनरक्षक प्रसून मानवीय सहित अन्य अमला मौजूद था ।

बारहहीरा में दो पक्षों में विवाद काउंटर प्रकरण दर्ज

अमरवाड़ा। थाना अंतर्गत ग्राम बारहहीरा में दो पक्षों में हुए विवाद मैं मारपीट एवं जान से मारने की धमकी देने पर पुलिस द्वारा काउंटर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम बारह हीरा निवासी कोहप सिंह पिता प्रीतम सिंह राजपूत के साथ हरि ओम जुगवाती दशोदा ने गंदी गंदी गाली देकर जान से मारने की धमकी दी वही हरिओम ने रिपोर्ट में बताया कि संतोष पिता प्रीतम, संजू पिता मोहप सिंह राजपूत दोनों ने मिलकर गंदी गंदी गाली मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने हुए विवाद मैं दोनों पक्षों की रिपोर्ट पर काउंटर प्रकरण सहायक उपनिरीक्षक केके बघेल तथा रजनीश सोनी ने धारा 294 506 आदि में प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया।

नाबालिग के अपहरण की आशंका

अमरवाड़ा थाना अंतर्गत ग्राम सुखारी की नाबालिग बालिका उम्र लगभग 17 वर्ष कुछ माह कि 3 दिन पूर्व 3ः00 अचानक घर से लापता हो गई परिजनों के द्वारा आशंका व्यक्त की गई है अनजान व्यक्ति द्वारा नाबालिक को बहला-फुसलाकर अपहरण कर ले जाया गया है परिजनों की रिपोर्ट पर गुमशुदगी तथा अपहरण का मामला सहायक उपनिरीक्षक सुभाष तिवारी द्वारा 363 एवं गुम इंसान में प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

बालिका के साथ मारपीट

अमरवाड़ा। ग्राम छुआदेही की रहने वाली नौवीं कक्षा की छात्रा अपनी बहन के साथ बकरी चराने के लिए गई थी बालिका की बकरी चरते चरते चरण वर्मा के खेत में चली गई तभी महेश नामक व्यक्ति आया और लड़की को गंदी गंदी गाली देने लगा मोनिका की बहन किरण ने उसे गाली देने से मना किया तो महेश ने मोनिका को जबरदस्त झापड़ मारा जिससे लड़की के कान एवं कान के नीचे चोट आई गोधन एवं किरण वर्मा ने बीच-बचाव किया तो महेश वर्मा कि दोबारा यदि बकरी चरते खेत आई तो जान से खत्म कर देने की धमकी देने की रिपोर्ट पर पुलिस द्वारा प्रकरण धारा 294 323 506 मैं पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया।

89 उप वन क्षेत्रपालों, वनपालों, वनरक्षकों व कर्मचारियों के स्थानांतरण आदेश जारी

छिन्दवाड़ा। वनमण्डलाधिकारी पूर्व वनमण्डल एवं नोडल अधिकारी वनवृत्त छिंदवाड़ा श्री ब्रिजेन्द्र श्रीवास्तव ने बताया कि राज्य शासन के सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों व स्थानांतरण नीति के अंतर्गत जिले के प्रभारी मंत्री के अनुमोदन पर वन विभाग में कार्यरत 2 उप वन क्षेत्रपालों, 14 वनपालों, 67 वन रक्षकों, 5 लेखापालों/सहायक ग्रेड-3 और एक भृत्य के स्थानांतरण आदेश जारी कर उन्हें आगामी आदेश तक नवीन पदस्थापना स्थल पर पदस्थ किया गया है । उन्होंने नियंत्रणकर्ता अधिकारी को निर्देश दिये हैं कि स्थानांतरित अधिकारी/कर्मचारी को आदेश जारी होने के एक सप्ताह के भीतर स्थानीय व्यवस्था से भारमुक्त कर पालन प्रतिवेदन भेजना सुनिश्चित करें ।

सेक्टर/जोनल अधिकारियों के लिये पी.जी.कॉलेज छिंदवाड़ा में प्रशिक्षण 18 को

छिन्दवाड़ा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले द्वारा आगामी विधानसभा निर्वाचन 2023 के अंतर्गत 295 सेक्टर/जोनल अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। इन नियुक्त सेक्टर/जोनल अधिकारियों के लिये आगामी 18 जुलाई को 3 सत्रों में शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय छिंदवाड़ा के मीटिंग हॉल के कक्ष क्रमांक-37 में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है । नियुक्त सेक्टर/जोनल अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि निर्धारित तिथि, समय, सत्र व स्थल में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त करना सुनिश्चित करें । अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी ओ.पी.सनोडिया ने बताया कि प्रशिक्षण स्थल शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय छिंदवाड़ा के मीटिंग हॉल के कक्ष क्रमांक-37 में 18 जुलाई को प्रातः 10ः30 से दोपहर 12 बजे तक विधानसभा क्षेत्र 126-छिंदवाड़ा के 34, 127-परासिया के 32 व 125-सौंसर के 37, दोपहर 12ः30 से 2 बजे तक विधानसभा क्षेत्र 128-पांढुर्णा के 44 व 122-जुन्नारदेव के 46 तथा दोपहर 3 से शाम 4ः30 बजे तक विधानसभा क्षेत्र 124-चौरई के 39 व 123-अमरवाड़ा के 63 सेक्टर/जोनल अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है ।

सीएम इंटर्नशिप के अंतर्गत आवेदकों की साक्षात्कार की प्रक्रिया 17 से 20 जुलाई तक

छिन्दवाड़ा। सीएम इंटर्नशिप (मुख्यमंत्री जनसेवा मित्र) के अंतर्गत भरे गए आवेदनों में आवेदकों के लिये आगामी 17 से 20 जुलाई तक जनपद पंचायत छिन्दवाड़ा के सभागार में साक्षात्कार की प्रक्रिया संपन्न होगी। साक्षात्कार के लिये चयनित प्रतिभागी लिंक के माध्यम से अपना नाम देख सकते है। इसके अलावा जनसंपर्क छिन्दवाड़ा के सोशल मीडिया पेज के माध्यम से भी देख सकते है। सीएम फैलो श्री गौरव कुमार जैन ने बताया कि साक्षात्कार के लिये चयनित प्रतिभागियों को उनके मोबाईल नंबर पर भी सूचित किया जा रहा है।

435.2 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

छिन्दवाड़ा। जिले की औसत वर्षा 1059 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 435.2 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 613.1 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 15 जुलाई को प्रातः 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 14.6 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है।

चौरई ग्रामीण मंडल अध्यक्ष की झूठी शिकायत के खिलाफ लामबंद हुई भाजपा

ज्ञापन देकर किया विरोध प्रदर्शन

छिंदवाड़ा। चौरई ग्रामीण मंडल अध्यक्ष पर दबाव देकर झूठी रिपोर्ट दर्ज करवाने के विरोध में भाजपा जिला अध्यक्ष और पूर्व विधायक पंडित रमेश दुबे के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने लामबंद होकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। जिला भाजपा द्वारा ज्ञापन में कहा गया कि राजनीतिक द्वेष के चलते राष्ट्रीय क्रांति मोर्चा के सदस्यों द्वारा धरना प्रदर्शन और चक्का जाम कर अध्यक्ष भाजपा ग्रामीण मंडल चौरई एवं पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष शैलेन्द्र रघुवंशी के ऊपर दिनांक 29 जून को एक शिक्षक के साथ मारपीट करने का आरोप लगाकर प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की जा रही है। उक्त शिकायत के संबंध में ज्ञापन में बताया गया कि 29 जून को शिकायतकर्ता विजय उर्फ पप्पू और उसके साथी ग्राम हरदुआमाल गये ही नहीं है और जो व्यक्ति ग्राम में था ही नहीं उसके साथ मारपीट कैसे हो सकती है। साथ ही शिकायतकर्ता ने अपनी शिकायत में गौतम पटेल का भी नाम मारपीट करने वालों में लिखा है गौरतलब है कि गौतम पटेल एक पैर और हाथ से विकलांग है पैर कटा है और वाकर के सहारे चलता है, जो व्यक्ति खड़ा नहीं हो पाता वो मारपीट कैसे कर सकता है । ज्ञापन के माध्यम से भाजपा नेताओं ने हरदुआमाल में घटित घटना की उच्च स्तरीय जांच कराये जाने की मांग की है।

दोनो शिकायतकर्ता ग्राम हरदुआमाल के निवासी नहीं

ज्ञापन में भाजपा नेताओं ने घटना के संबंध में कई तथ्य उजागर कर उनके आधार पर उच्च स्तरीय जांच की जाने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया की हरदुआमाला घटना के दोनो शिकायतकर्ता गांव के निवासी ही नहीं है, दोनों छिंदवाड़ा तहसील के निवासी है। इन दोनों के द्वारा एक राजनीतिक षडयंत्र कर झूठी शिकायत दर्ज कराई है ताकि भाजपा नेता की सामाजिक और राजनैतिक छवि को धूमिल किया जा सके । ज्ञापन में भाजपा नेताओं ने कहा की कुछ लोग इस प्रकार की झूठी घटना बनाकर पूरे जिले में एक साजिश के तहत सामाजिक विद्धेश बढाकर उसे धार्मिक रंग देकर सभी समाज को आपस में लड़ाना चाहते है । भाजपा नेताओं ने बताया कि ऐसा करने के पीछे इनका मूल उद्देश्य झूठी घटना बनाकर उससे राजनीतिक लाभ लेना और क्षेत्र की सामाजिक शांति को भंग करना है । साथ ही भाजपा नेताओं ने आशंका व्यक्त करते हुए कहा कि इनके पीछे कुछ ऐसी ताकत काम कर रही है जिनका उद्देश्य पूरे देश में धार्मिक और सामाजिक असमानता फैलाकर देश को कमजोर करना है ।

घटना की उच्च स्तरीय जांच करवाने की मांग

पूर्व विधायक पंडित रमेश दुबे ने मांग की कि इस पूरे षड्यंत्र का मास्टरमाइंड कौन है और इनका उद्देश्य क्या है? ज्ञात कराना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही उन्होंने कहा की यदि जांच में शिकायतकर्ता की शिकायत सहीं पाई जाती है तो जो भी कार्यवाही होगी हम उसे स्वीकार करेंगे लेकिन जांच में यह सब घटनाक्रम झूठा निकला तो संबंधित दोषी व्यक्तियों पर कड़ी कार्यवाही करना सुनिश्चित किया जावे।

छिंदवाड़ा कलेक्टर श्रीमती पटले को ज्ञापन सौंपने

जिला अध्यक्ष, लोकसभा अशोक यादव, शेषराव यादव, पूर्व विधायक पंडित रमेश दुबे, नत्थन शाह, टीकाराम चंद्रवंशी, कांता ठाकुर, आशीष ठाकुर, वीरपाल इवनाती, ठाकुर प्रियवर सिंह, चौरई ग्रामीण मंडल अध्यक्ष शैलेन्द्र रघुवंशी, दानसिंह पटेल, रामचंद्र बोबडे, पूर्णिमा जैन, सरोज रघुवंशी, निरकुंश नागरे, लक्ष्मीकांत नागरे, जीतेन्द्र चौरे, अलकेश लाम्बा, दीपक कोल्हे, संतोष पटेल, संजय पटेल, अनिल उइके, राजेंद्र भकने, संतोष भलावी, अंकित जैन, पीयूष बत्रा, गौतम पटेल, राधेश्याम सहित भाजपा के बड़ी संख्या में कार्यकर्तागण पहुंचे।

पटवारी चयन परीक्षा में धांधली पर जयभीम सेना एवं ओबीसी महासभा ने राष्ट्रपति के नाम सौंपा ज्ञापन

छिंदवाड़ा। जय भीम सेना ओबीसी महासभा के तत्वाधान में म.प्र. कर्मचारी मंडल द्वारा पटवारी की परीक्षा में हुई धांधली को लेकर ज्ञापन सौंपा। उक्त धांधली में एक ही कॉलेज से 7 टॉपर एवं 114 चयनित छात्र हुये जो व्यापक अनियमितता को दर्शाता है। पूरे मध्यप्रदेश में पटवारी परीक्षा पर हुई व्यापक धांधली को लेकर छात्र-छात्राओं में भयंकर आक्रोश है।

महापौर विक्रम अहके ने किया जिला जेल का भ्रमण, सुलझाई पेयजल की समस्या

छिंदवाड़ा। कमलनाथ, नकुलनाथ की मंसानुरूप नगर निगम छिंदवाड़ा महापौर विक्रम अहके जनसेवा को सर्वोपरि मानते हुए प्रतिदिन साफ-सफाई का जायज़ा लेने शहर के विभिन्न वार्डो में पहुंच रहे है इसी कड़ी में जिला जेल अधीक्षक के विशेष आमंत्रण पर जिला जेल पहुंचे। जिला जेल पहुंच कर महापौर ने जेलर के साथ सम्पूर्ण जेल का भ्रमण किया एवं कार्यालय, बंदीगृह, उद्यान सहित मीटिंग रूम की व्यवस्था देखी। भ्रमण के दौरान जेल में पेयजल में कमी की समस्या की जानकारी मिलने पर महापौर विक्रम अहके द्वारा तत्काल पेयजल शाखा प्रमुख सहायक यंत्री विवेक चौहान को जेल में अतिरिक्त नल कनेक्शन प्रदान करने के निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान जेल के भीतर की सफाई व्यवस्था अच्छी होने पर महापौर द्वारा जेल की सफाई व्यवस्था की भी प्रशंसा की गई।

123 श्रावकगणों ने लिया प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ

वीतराग भवन में मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फेडरेशन का शिविर

छिंदवाड़ा। सभी के स्वास्थ लाभ की मंगल एवं पवित्र भावना को लेकर जिनवाणी तत्वरसिक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन द्वारा नगर के अहिंसा स्थली गोल गंज स्थित वीतराग भवन में दो दिवसीय निःशुक्ल प्राकृतिक चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का सफल आयोजन किया गया जिसका लाभ 123 श्रावकगणों ने लिया।फेडरेशन सचिव दीपकराज जैन ने बताया कि शिविर का मुख्य उद्देश्य जनमानस को अहिंसक पद्धति नेचरोपैथी एवं जैनोपैथी द्वारा स्वस्थ रहने की कला सीखना तो था ही साथ में स्वयं ही स्वयं के डॉक्टर बनकर उस विधि से स्वयं का परिवार, समाज सहित माँ भारती का हित कैसे करें यह बात बतानी थी जो लगभग शतप्रतिशत सार्थक रहा। दो दिवसीय निःशुक्ल शिविर में श्री वर्धमान प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान अमायन भिंड के वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी जैन एवं उनके सहयोगी डॉ. विवेकजी जैन ने कुशल सेवाएं देकर सुबह - दोपहर एवं रात्रि तीनों समय गणमान्य नागरिकों का उपचार किया साथ में प्राकृतिक चिकित्सा की विधि श्रावकगणों को बताई।सफल आयोजन के लिए मण्डल के विमलकुमार जैन, फेडरेशन सचिव दीपकराज जैन, शिविर सयोंजक वर्धमान जैन के साथ सचिन जैन, विशाल शास्त्री, राहुल जैन, डॉ. मनीषा जैन, संस्कृति जैन एवं इशिता जैन ने अतिथि चिकित्सकों सहित सभी लाभार्थियों का आभार व्यक्त किया।

स्वस्थ रहना है तो इनसे बनाएं दूरियां

शिविर के दौरान डॉ. सुरेशचंद्रजी जैन ने श्रावकगणों से अपील करते हुए कहा कि अगर आपको स्वस्थ रहना है तो प्लास्टिक एवं एल्युमिनियम से बने समस्त उपकरणों से दूरियां बनानी होगी, बाजार के कैमिकल युक्त पैक मसाले, कोल्ड्रिंक, पैकिट का दूध, दही, छाछ, आटा, मैदा आदि समस्य खाद्य एवं पेय पदार्थ। जंक फूड्स, पिज्जा, बर्गर सहित रिफाइंड तेल आदि का सेवन न करें। स्वस्थ रहने के लिए ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नियमित व्यायाम करें, प्रतिदिन कम से कम दो से चार किलोमीटर पैदल धूमने जाएं, सुबह खाली पेट कम से कम दो गिलास गुनगुना पानी पियें साथ मे नींबू युक्त पानी भी पी सकते हैं। भोजन में 80 प्रतिशत फल एवं हरि सब्जियां एवं 20 प्रतिशत अन्न अर्थात रोटी, दाल, चांबल का सेवन करें। दिन में कम से कम 4 लीटर पानी अवश्य पियें।

स्टार योजना के अंतर्गत कौशल प्रदर्शनी स्किल एक्सपो

बिछुआ। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिछुआ में संचालित स्टार योजना के अंतर्गत कौशल प्रदर्शनी (स्किल एक्सपो) कार्यक्रम संस्था में शनिवार को विश्व कौशल युवा दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। 9वीं से 12वीं कक्षा की छात्राओं जिसमें व्यवसायिक शिक्षा के अध्ययनरत ट्रेंड ब्यूटी एवं वेलनेस एवं हेल्थ केयर के छात्राओं ने अपना-अपना मॉडल/चार्ट/लघु/नाटक के द्वारा कौशल प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में संस्था प्राचार्य एम. के. यूवने, उत्कृष्ट विद्यालय प्राचार्य पडोले सर, मोरेश्वर कुरेकार, व्यवसायिक शिक्षा के नोडल अधिकारी जितेंद्र नागरे, गणेश घागरे, वोकेशनल ट्रेनर रानी चौरिया, चारूमित्रा चौरे, मोनिका पलवार, रेखा बम्होरे, बलदेव डोबारे, रामप्रसाद परतेती, स्वाती शुक्ला, रुपाली हुरडे, नीतू पवार, सीमा बघेल, संजय परतेती, संजीव गौतम, खेल समन्वयक प्रकाश डेहरिया, ढाकरिया सर, सुरेश मानमोडे, ग्यारसी भलावी, जयराम चौरे उपस्थित रहे।

अति बारिश रात्रि 3 बजे भरभरा कर गिरा मकान

बेटे और पत्नी को आई चोट, छिंदवाड़ा रिफर

अमरवाड़ा नगर के समीपस्थ ग्राम भुडकुम ढाना में अति बारिश की वजह से शुक्रवार शनिवार की दरमियानी रात्रि 3ः00 बजे कच्चा मकान भरभरा कर गिर गया मकान के अंदर पति पत्नी सहित एक बच्चा सो रहा था सभी मकान के मलबे में दब गए मौके पर रात्रि 3ः00 बजे पड़ोसियों की मदद से मलबे में दबे पति पत्नी और उनके बच्चे को बाहर निकाला गया वही बच्ची को गंभीर चोट आई है वही पीड़ित परिवार के सद्दू पिता सावना इनवाती और उसकी पत्नी कन्याकुमारी पति सद्दू इनवाती और उनका 5 माह का बेटा और एक बेटी सो रही थी जैसे ही मकान भरभरा कर उनके ऊपर गिरा जिसकी वजह से पत्नी और बेटी को गंभीर चोट आई है वही आवाज इतनी तेज आएगी आवाज सुनते ही आसपास के पड़ोसी मौके पर दौड़ गए और लकड़ी को काटकर बड़ी मशक्कत के साथ दंपति और बच्चों के साथ मवेशियों को मलबे से नीचे निकाला और तत्काल हंड्रेड डायल पुलिस और संजीवनी 108 को सूचित किया संजीवनी 108 की मदद से घायल पत्नी और बेटे को अमरवाड़ा हॉस्पिटल में भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय भेज दिया गया है वही घटना की जानकारी मिलते ही तहसीलदार छवि पंथ के द्वारा तत्काल पटवारी को पंचनामा बनाने के लिए निर्देशित किया गया है वही पीड़ित परिवार ने मुआवजे की गुहार लगाई है।

नगरपालिका अध्यक्ष ने स्वीकृत करायी मुआवजा राशि

अमरवाड़ा। नगर के वार्ड क्रमांक 15 में विगत दिनों भारी बारिश के कारण ओमप्रकाश पीपले एवं अन्य व्यक्तियों के घर गिर जाने पर मुआवजे की राशि स्वीकृत कराकर नगरपालिका अध्यक्ष प्रीति नितिन तिवारी ने स्वीकृति पत्र हितग्राहियों को वितरित किए। भारी बारिश के कारण मकान ढहने की सूचना पर उस समय तत्काल वार्ड क्रमांक 15 की पार्षद एवं सभापति कल्पना सतीश साहू के साथ नगर पालिका अध्यक्ष ने पीड़ितों के घर का मुआयना किया था, और तत्काल मौके पर पटवारी को बुलाकर मुआवजा बनाने के निर्देश दिए थे पीड़ितों को नगरपालिका कार्यालय में अध्यक्ष एवं सभापतियों के द्वारा मुआवजा राशि के स्वीकृति पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर नगर पालिका सभापति नीतू शैलेंद्र पटेल, सुरक्षा नवीन जैन, भाजपा नेता सतीश संतु साहू, प्रहलाद सूर्यवंशी एवं हितग्राही और उनके परिवारजन उपस्थित रहे ।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान इमलीखेड़ा में 6 दिवसीय जैविक खेती का प्रशिक्षण

छिन्दवाड़ा। भारत शासन के ग्रामीण विकास मंत्रालय के अधीन सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा संचालित ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान इमलीखेड़ा के तत्वावधान में आज संस्थान में 6 दिवसीय जैविक खेती का प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ । प्रशिक्षण कार्यक्रम में म.प्र.डे ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से जिले के विकासखंड जुन्नारदेव, मोहखेड़ और बिछुआ के स्व-सहायता समूह की 43 महिला प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अग्रणी जिला प्रबंधक हुकुम चन्द्रा, म.प्र.डे ग्रामीण आजीविका मिशन से जिला प्रबंधक सुक्कन कुमार कवडे व निर्मल कुमार कटरे, वित्तीय साक्षरता प्रभारी पी.आर.उइके, संकाय प्रभारी श्री सौरभ पटेल व संस्था के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में संपन्न हुआ, जबकि समापन कार्यक्रम में भी अग्रणी जिला प्रबंधक हुकुम चन्द्रा, वित्तीय साक्षरता प्रभारी पी.आर.उइके, संकाय प्रभारी सौरभ पटेल, कार्यालय सहायक सुश्री महिमा डेहरिया व संस्था के अन्य सदस्यों ने सहभागिता की। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण केंद्र द्वारा प्रतिभागियों को भोजन व आवास की सुविधा के साथ ही निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है तथा ग्रामीण क्षेत्र के बेरोजगार युवक-युवतियों को प्राथमिता के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाता है। ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को जैविक खेती के संबंध में सभी जानकारी प्रदान करने के साथ ही जीवामृत बनाने की विधि बताई गई और प्रैक्टिकल कराया गया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यक्तित्व व उद्यमिता विकास के तकनीकी और व्यवहारिक पहलुओं पर भी विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए अतिथियों ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये और उन्हें जल्दी से अपना स्वरोजगार शुरू करने के लिए शुभकामनाएं प्रदान की। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उप संचालक कृषि जितेन्द्र कुमार सिंह और आंचलिक कृषि अनुसन्धान केंद्र के प्रमुख डॉ.व्ही.के.पराडकर ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। प्रशिक्षण में श्री एस.एल.नागवंशी का पाठ्यक्रम पूर्ण कराने में विशेष सहयोग रहा।

जिले में निर्यात को बढ़ावा देने के लिये छिंदवाड़ा में मार्गदर्शन कार्यशाला 17 जुलाई को

छिन्दवाड़ा। जिले में निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिले को एक्सपोर्ट हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। जिले में फेब्रिक, रेडीमेड वस्त्र, सिल्क फेब्रिक, फूड एण्ड वेजीटेबल प्रोसेस्ड पावडर, डिहाइड्रेटेड फरूट्स एण्ड वेजीटेबल्स, कन्वेयर बेल्ट, एम.एस.स्पाइरल पाइप, हेण्डीक्राफ्ट, केमिकल्स, आयुर्वेदिक औषधियां, चिरोन्जी, कॉर्न, ऑरेन्ज, कस्टर्ड एपल, वाइल्ड हनी आदि अनेक प्रोडक्ट के निर्यात की प्रबल संभावनायें हैं। निर्यात के क्षेत्र में रूचि रखने वाले उद्योगों, उद्यमियों, एफ.पी.ओ, व्यापारियों, नये स्टार्ट अप आदि को निर्यात के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिये विदेश व्यापार निदेशालय (डीजीएफटी) नागपुर द्वारा आगामी 17 जुलाई को दोपहर 2 बजे से परासिया रोड छिन्दवाड़ा स्थित होटल एकॉर्ड इन्टरनेशनल में मार्गदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया है। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक श्री जी.के.हरणे ने बताया कि कार्यशाला में विशेषज्ञों द्वारा एक्सपोर्ट के लिये पंजीयन, एक्सपोर्ट फाइनेन्स, एक्सपोर्ट सुविधाऐं, ई-कॉमर्स आदि गतिविधियों संबंधी जानकारी प्रदान की जायेगी। उन्होंने बताया कि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जित करने व अर्थव्यवस्था के विकास में निर्यात की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भोपाल की सेज यूनिवर्सिटी से निःशुल्क शिक्षा हासिल करेंगे जिले के युवा

कमलनाथ व नकुलनाथ की विद्यार्थियों के लिये एक और सार्थक पहल

छिन्दवाड़ा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ एवं जिले के सांसद नकुलनाथ की प्राथमिकता में जिले के युवाओं का भविष्य संवारना है। छात्र-छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा मुहैया कराकर उन्हें रोजगार से जोड़ने वाली पहल निरंतर जारी है और इसके परिणाम भी सार्थक आ रहे हैं। इंदौर की रेनेसॉ यूनिवर्सिटी से युवाओं को निःशुल्क शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने के उपरांत अब छिन्दवाड़ा जिले के युवाओं को भोपाल की सेज यूनिवर्सिटी से शिक्षा हासिल करने का मौका मिल रहा है।

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ एवं सांसद नकुलनाथ के प्रयासों से जिले के विद्यार्थी अब प्रदेश के नामी निजी सेज विश्वविद्यालय भोपाल से निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करेंगे। नेताद्वय द्वारा जिले के युवाओं को रेनेसा यूनिवर्सिटी इंदौर से निःशुल्क उच्च शिक्षा, जेईई मेंस, नीट की निःशुल्क कोचिंग, विभिन्न शासकीय प्रतियोगी परीक्षाओं की कॅरियर फर्स्ट के माध्यम से निःशुल्क कोचिंग, विभिन्न अंतराष्ट्रीय कंपनी जैसे एचसीएल, इश्यासॉफ्ट, टीसीएस, कू एप आदि में रोजगार जैसे अनेकों अवसर जिले के युवाओं के लिये उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। गत वर्ष 50 विद्यार्थियों को सेज यूनिवर्सिटी भोपाल में निःशुल्क उच्च शिक्षा का अवसर प्रदान किया गया था। अब इसी कड़ी में इस वर्ष जिले के 70 युवाओं को विभिन्न पाठ्यक्रमों में निःशुल्क उच्च शिक्षा प्रदान की जावेगी। पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिये इच्छुक विद्यार्थी सादे कागज पर राजीव कांग्रेस भवन में आवेदन कर सकते हैं।

यह होनी चाहिये योग्यता कार्यक्रम समन्वयक कीर्ति सोनी ने बताया कि स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों का बारहवीं में 60 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर पाठयक्रम के लिये स्नातक 60 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा।

इन विषयों में मिलेगा प्रवेश

एमएससी, बीबीए, एमबीबीए, बीटेक, बीटेक, बीए, बीकॉम, बीएससी, बीबीए, एलएलबी, बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स, मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स, एमए जर्नलिज्म, परफार्मिंग व साइंस विषयों में निःशुल्क शिक्षा का अवसर प्राप्त होगा।

सरकार की पेंशनर्स साथियों के प्रति नकारात्मक रवैया पर चर्चा की

विद्युत पेंशनर्स हितरक्षक संघ शाखा छिंदवाड़ा की बैठक

छिंदवाड़ा। विद्युत पेंशनर्स हितरक्षक संघ शाखा छिंदवाड़ा की बैठक श्रम कल्याण केन्द्र में आयोजित हुई जिसमे पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे कार्य. अध्यक्ष आर के सोनी ने वर्तमान सरकार की पेंशनर्स साथियों के प्रति नकारात्मक रवैया पर प्रकाश डाला साथ ही संगठन विस्तार ,सभी साथियों की संगठन के प्रति जवाबदेही, नए पेंशनर साथियों को जोड़ने एवं बीमार एवं असहाय पेंशनर्स साथियो के बच्चे बाहर रहते है उस परिवार की सहयोग प्रदान करने पर भी बात रखी।श्री एस के अहिरवार ने संगठन को मजबूत करने के साथ न एकजुट होने की बात कही. प्रभुनारायण नेमा ने पेंशन के भविष्य में भुगतान की अनिश्चितता होने, विद्युत कंपनियों के द्वारा पेंशन फंड में राशि जमा न होने पर चिंता बताई साथ ही अपने संगठन को मजबूत करने और पेंशनर्स साथियों के हित में यूनाइटेड फोरम द्वारा की जा रही कार्यवाही पर भी प्रकाश डाला.संगठन के अध्यक्ष जे पी त्रिपाठी ने कहा कि जब हम नौकरी में थे तो सब पदानुरूप थे किंतु सेवानिवृत होने के बाद हम सब पेंशनर है अतः ये भेदभाव खत्म होना चाहिए साथ ही संभागीय स्तर पर संगठन की इकाई बनाकर विस्तारीकरण करने कहा गया.अपनी पेंशन को सुरक्षित रखने अपने प्रदेश अध्यक्ष अशोक गुप्ता भोपाल के द्वारा किए जा रहे प्रयासों, उनके द्वारा कोर्ट ने दायर याचिका के बारे सराहना कर सभी साथियों को अवगत कराया . साथियों 30 जून को सेवानिवृत होने वाले कर्मचारी साथियों को एक इंक्रीमेंट का घाटा हो रहा है अतः इस संबंध में अशोक गुप्ता प्रदेश अध्यक्ष आर के सोनी से संपर्क करने बात रखी गई एवं बैठक में यह निर्णय लिया गया कि भविष्य में संगठन की बैठक प्रत्येक माह द्वितीय शनिवार को रखी जावेगी और उस माह में जिस पेंशनर साथी का जन्मदिन आएगा उसे जश्न के रूप में मनाने पर सहमति बनी और आगामी बैठक में जिले के सभी पेंशनर्स साथियों को बैठक में आने अपील की गई. आगामी बैठक 12 अगस्त को छिंदवाड़ा में होगी

बच्चों को वितरित की गई टॉफी, बच्चों ने उड़ाए गए गुब्बारे

ऊर्जा महिला चाइल्ड डेक्स में पुलिस ने छोटे-छोटे बच्चों के साथ किया कार्यक्रम

अमरवाड़ा। पुलिस थाना परिसर मैं ऊर्जा महिला डेक्स कक्ष मैं नगर निरीक्षक मोहन सिंह मसकोले के मार्गदर्शन में थानेदार ओ पी सनोडिया उप निरीक्षक आ पी चौधरी महिला थानेदार दीपा ठाकुर सहायक उपनिरीक्षक रजनीश सोनी आरक्षक राजकुमारी बघेल की उपस्थिति में छोटे छोटे नन्हे मुन्ने बच्चे को सद्भावना के साथ ऊर्जा महिला डेक्स चाइल्ड फ्रेंडली कार्यक्रम किया गया जिसमें अमरवाड़ा में स्थित ऊर्जा महिला अध्यक्ष कार्यालय में पोस्टर एवं बैनर लगाकर छोटे-छोटे बच्चों को जानकारी देकर बताया गया कि पुलिस आपकी मित्र है इनसे डरने की आवश्यकता नहीं है छोटे-छोटे बच्चों के साथ स्नेह पूर्वक माहौल बनाकर मिष्ठान टॉफी गुब्बारों का वितरण किया गया।

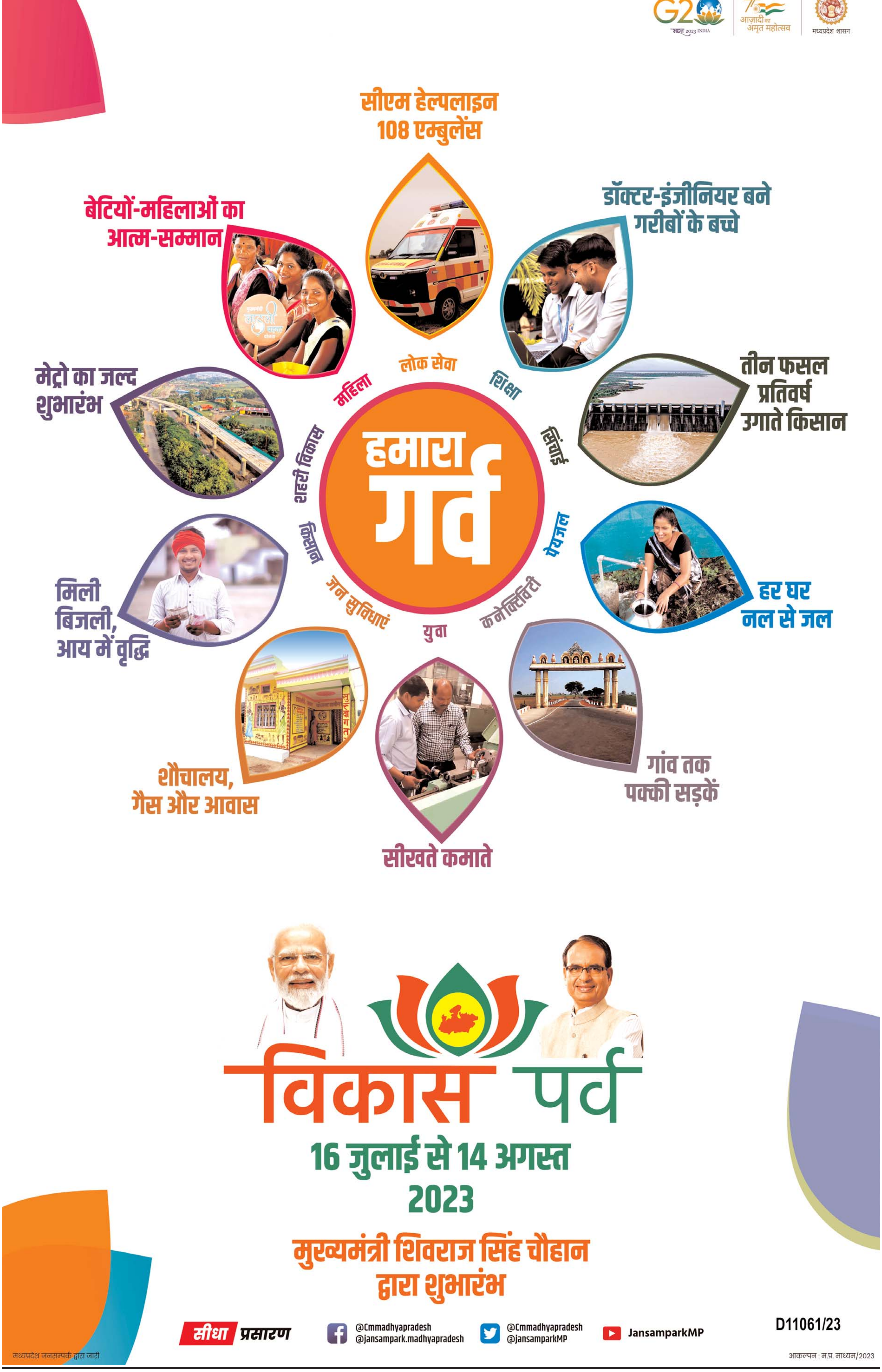
G20 भारत 2023 INDIA
आज़ादी का अमृत महोत्सव
मध्यप्रदेश शासन
सीएम हेल्पलाइन
108 एम्बुलेंस
डॉक्टर-इंजीनियर बने
गरीबों के बच्चे
बेटियों-महिलाओं का
आत्म-सम्मान
तीन फसल
प्रतिवर्ष
उगाते किसान
मेट्रो का जल्द
शुभारंभ
लोक सेवा
शिक्षा
महिला
सिंचाई
शहरी विकास
पेयजल
किसान
कनेक्टिविटी
जन सुविधाएं
युवा
हमारा
गर्व
हर घर
नल से जल
मिली
बिजली,
आय में वृद्धि
गांव तक
पक्की सड़कें
शौचालय,
गैस और आवास
सीखते कमाते
विकास पर्व
16 जुलाई से 14 अगस्त
2023
मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान
द्वारा शुभारंभ
सीधा प्रसारण
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP
D11061/23
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2023